चन्दामामा
माँ-बच्चों का मासिक पत्र
50
8

Photo by P. K. Patel

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

वह देखो दूध की हंडी !

प्रेषक :
हरीश उदासी, अमरावती

मनोहर गन्धवाली!
Remy
Remy
रेमी
सौन्दर्य
सामग्री

चन्दामामा

जुलाई १९५९

मुन्नी रोई तो भला क्यों ?

मुन्नी ने जब रोना शुरू किया तो पहिले कुछ कुछ करने लगी। फिर हिचकियाँ भरी और देखते ही देखते आसमान सर पर उठा लिया। मुन्नी की सहेली नीनू पुचके पुचके मुन्नी को मना रही थी। अपनी तोतली भाषा में कह रही थी, "ना रो मुन्नी, जब मेरे पिता जी ओफिस से आयेंगे तो उनसे मैं बोलूंगी ..." लेकिन नीनू की सुनता कौन है। मुन्नी की नई गोल मटोल गुड़िया के भरे भरे गुलाबी गालों पर मैल का बड़ा सा तिल लगा था, गुड़िया की नई फ्राक पर मैली उंगलियों के निशान पड़े थे ... और मैं खिड़की की ओट में खड़ी यह तमाशा देख रही थी। जब मुन्नी नहीं मानी तो मैं अंदर आई। मुझे देख कर तो जैसे गवैया दाद पा जाने पर ऊंची ऊंची तानों में गाने लगता है, मुन्नी उसी तरह से रोने लगी। बेचारी नीनू, हमारे पड़ोसियों की लड़की, दुबक कर सहमी सहमी सी एक कोने में खड़ी हो गई। अभी मैं सोच ही रही थी कि मुन्नी को मनाऊं तो नीनू और घबराएगी और जो नीनू को दिलासा दूं तो मुन्नी अपनी चीखों से कानों के पर्दे फाड़ देगी, तभी नीनू की माँ, सुशीला दौड़ी आई। मुन्नी को लपक कर गोदी में उठाया और लाड़ से कहने लगी, "हमारी चिड़िया को कौन मारता है।"

और चिड़िया रानी सिसकियाँ ले ले कर बोली, "चाची, चाची, नीनू—नीनू ने गुड़िया की फ्राक मैली कर दी!"

"ओ, हो, हो! हम नीनू को मारेंगे। अपनी प्यारी मुन्नी को नई फ्राक लाके देंगे।"

"चाची, चाची, मेरे लिये नहीं, गुड़िया के लिये।"

मुन्नी, नीनू और गुड़िया को सुशीला अपने साथ ले गईं और मैं घर के काम काज में लग गई। [illegible] मुन्नी गुड़िया

आप पढ़ कर हैरान होंगे कि...

एजियन सागर में अर्जेनटेरिया नाम का एक छोटा सा द्वीप है। इस की धरती में साबुन के गुण हैं। पानी डालिये और झाग पैदा हो गया। खास कर कि बरसात के दिनों में आप को हर कहीं घुटने घुटने झाग नज़र आयेगा। यहां के लोग सदा से इसी झाग से अपने कपड़े धोते हैं और ख़ुद भी नहाते हैं।

शरीर की सफाई के लिये साबुन जैसे पदार्थ का इस्तेमाल कोई नई चीज़ नहीं है। इतिहास हमें बताता है कि इस का उपयोग लगभग पिछले २५०० वर्ष से हो रहा है।

वैज्ञानिक रीति से साबुन बनाने का सेहरा 'शेवरोल' नामक एक फ्रांसिसी के सर है जिस ने १८११ में पहले पहल साबुन बनाया।

लाइफबॉय साबुन ने १८९४ में जन्म लिया और आज लग भग हर देश में यह सेहत व सफाई का अंतरराष्ट्रीय दूत बन चुका है।

इसका कारण यह है कि हम कुछ भी करें, खेलें कूदें या पढ़ें लिखें, मैले ज़रूर हो जाते हैं और गंदगी में बीमारी के कीटाणु होते हैं जिन्हें माइक्रोस्कोप द्वारा ही देखा जा सकता है। लाइफबॉय साबुन की खास खूबी यह है कि यह गंदगी के कीटाणुओं को धो डालता है और आप की तंदुरुस्ती की रक्षा करता है। आप भी हर रोज़ लाइफबॉय से नहाने की आदत डालिये और अपनी तंदुरुस्ती की रक्षा कीजिये।

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड, बम्बई

लाखों बाल-बालिकाओं को सुलेखन में आनंद प्रदान करनेवाली

इ

सि

सफेद

पंच रंगो में

स्लेट-पेंसिल्स्

OTHER PRODUCTS

- METALLO POWDER
- METALLO PASTE
- RUST-PROOF GREASE
- GRAPHITE CRUCIBLES
- ALUMINIUM WELDING FLUX

MANUFACTURERS :— *Indian Chemical And Ceramic Industries, Gandhinagar, Vijayawada - 2. (Andhra Pradesh)*

TRADE ENQUIRIES INVITED

मोहक सौंदर्य के लिये

Kashmir

नेशनल का काश्मीर स्नो

चित्र तारिकाओं का प्रिय

दी नेशनल ट्रेडिंग कंपनी बम्बई - २ ★ मद्रास -

चन्दामामा

संचालक: चक्रपाणी

फिल्म का माध्यम, जहाँ मनोरंजन का है वहाँ शिक्षा का भी है। हमारी ९० प्रतिशत जनता निरक्षर है, इसलिये फिल्म के माध्यम की उपयोगिता और भी बढ़ जाती है। भारत में, भारत की भाषाओं में मनोरंजन के लिए तो बहुत-सी फिल्में हैं पर शिक्षा के लिए कम ही हैं। अब सरकार ने शिक्षा और मनोरंजन के लिए फिल्म बनाना निश्चय किया है। बच्चों के लिए फिल्में बनाने के लिए तो एक नई संस्था भी कायम की गई है। इस संस्था ने फिल्में बनाना प्रारम्भ कर दिया है। अब यह ज्ञात हुआ है कि सरकार एक कार्टून फिल्म भी बनवा रही है, जो बच्चों के लिए विशेषतः मनोरंजक होगी।

वर्ष: १० जुलाई १९५९ अंक: ११

जब अम्बा इस प्रकार मुनियों से बातें कर रही थी, तो वहाँ होत्रवाहन नाम का राजर्षि आया। मुनियों ने उनका स्वागत किया, आसन दिया। और वे फिर यथापूर्व अम्बा के बारे में बातें करने लगे। होत्रवाहन ने उनकी बातचीत से अम्बा की सारी कहानी जानी। सहसा आसन से उठकर उसने अम्बा का आलिंगन किया।—"बेटी, मैं तेरी माता का पिता हूँ। तेरा नाना हूँ। तुम पर क्या आपत्ति आ पड़ी है, जरा मुझे विस्तार से तो बताओ।" उसने उसको आश्वासन दिया।

अम्बा ने अपना सारा वृतान्त होत्रवाहन को भी सुनाया। सब सुनकर उसने कहा—"बेटी, तुम्हारा पिता के घर जाना बिल्कुल उचित नहीं है। मैं तुम्हारे दुःख का निवारण करने का उपाय बताता हूँ। तुम मेरे साथ रहो। पर तुम तपस्या न कर पाओगी। तुम यह प्रयत्न छोड़ दो। जमदग्नि के लड़के, परशुराम के पास जाओ। तुम उससे कहो कि तुम्हारे साथ कैसे अन्याय किया गया है। वह आकर भीष्म को मार देगा। इस समय परशुराम महेन्द्र पर्वत पर कठिन तपस्या कर रहा है। वह मेरा मित्र है। यह कहने पर कि मैंने तुम्हें भेजा है, वह तुम्हारी देख भाल करेगा, और तुम्हारे कष्ट दूर कर देगा। तुम उससे मिलो।"

इतने में वहाँ अकृतव्रण नाम का महर्षि आया। अकृतव्रण, परशुराम के अनुचरों में एक था। उसके आते ही सब मुनियों ने उसका उठकर स्वागत किया। वह बैठ गया और मुनियों से दर्शन पर बातचीत करने लगा।

उस समय, होत्रवाहन ने अकृतव्रण से परशुराम का कुशल क्षेम पूछा।—"अब वे कहाँ हैं?" उसने जानना चाहा।

"वे प्रायः आपका स्मरण करते रहते हैं। आपको देखने के लिए वे यहाँ आ रहे हैं, सम्भव है कि वे कल तक पहुँच जायें। यह लड़की कौन है? क्या आपकी कोई सम्बन्धी है?" अकृतव्रण ने, अम्बा के विषय में प्रश्न किया। होत्रवाहन के अम्बा की कथा बताने पर, उसने अम्बा से कहा—"तुम्हारे कष्टों के कारक दो हैं। एक भीष्म, जो तुमको जबर्दस्ती उठा ले गया, दूसरा साल्व राजा, जिसने तुमसे विवाह करने से इनकार कर दिया। इनमें से तुम पहिले किससे बदला चुकाना चाहती हो, पहिले यह निश्चय करलो, फिर परशुराम से कहना अच्छा है।"

अम्बा निश्चय न कर सकी कि क्या कहे—"महात्मा, आपने भी मेरी सारी कहानी सुनी है। आप ही सोचिये कि इन दोनों को सजा देना जरूरी है या एक को ही?"

तब अकृतव्रण ने कहा—"मेरे विचार में तो भीष्म ही दोषी है। अगर उसको परशुराम ने मार दिया, तो तेरा बदला चुक जायेगा।
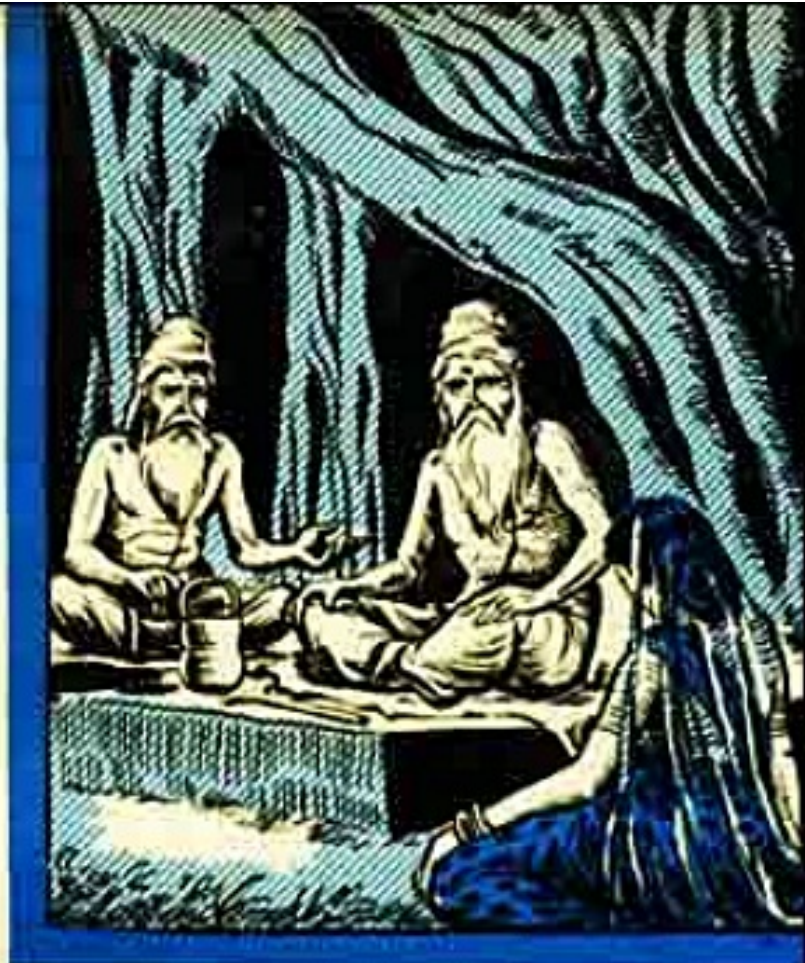
अम्बा ने कहा—"मुझे भी ऐसा ही लगता है। रात भर, आश्रमवासी, अम्बा के बारे में ही बातें करते रहे।

अगले दिन सवेरे परशुराम अपने शिष्यों के साथ आश्रम में पहुँचा। यद्यपि वह मुनि वेश में था तो भी उसके साथ बाण, तलवार, और फरसे थे। परशुराम के आने से आश्रम में तहलका-सा मच गया। जब उनका उचित स्वागत सम्मान हो गया तब होत्रवाहन ने, अम्बा को

दिलाया। उसका परशुराम से परिचय कराया।

अम्बा उसके पैरों पर पड़ी और ज़ोर से रोते हुये उसने उसकी शरण माँगी।

"बेटी, जैसा तुम्हारे लिये होत्रवाहन है, वैसा ही मैं हूँ। बताओ, तुम्हारी इच्छा क्या है, मैं उसे पूरा करूँगा।" परशुराम ने कहा।

"महात्मा, मेरा जीवन भीष्म ने नष्ट कर दिया है। आप उसका नाश करके मेरा दुख निवारण कीजिये।" अम्बा ने कहा।

परशुराम ने कहा—"मैंने प्रतिज्ञा की हुई है कि मैं ब्राह्मण रक्षा के अतिरिक्त किसी और काम के लिए शस्त्र न पकड़ूँगा। तब मैं भीष्म को कैसे मार सकता हूँ! यही नहीं, भीष्म हमेशा मेरे सेवक की तरह ही रहता है। जो मैं कहता हूँ वह करता है। इसलिये उसको मारने की कोई जरूरत नहीं है।

अम्बा को लेकर भीष्म के पास चला जाय और उसको भीष्म से विवाह करने के लिए कहा जाय और यदि वह विवाह करने से इनकार करेगा तो वह ब्राह्मण का तिरस्कार कर रहा होगा। उस हालत में वह भीष्म से युद्ध कर सकेगा। यों परशुराम ने निश्चय किया। इसका आश्रमवासियों ने समर्थन भी किया।

परशुराम ने रात आश्रम में ही काटी। अगले दिन, उन सब को और अम्बा को साथ लेकर वह कुरुक्षेत्र आया और सरस्वती नदी के किनारे उसने पड़ाव किया।

कुरुक्षेत्र पहुँचने के तीसरे दिन बाद परशुराम ने भीष्म को खबर भेजी। भीष्म खुशी खुशी परशुराम को देखने आया। "भीष्म, तुमने यह क्या किया है! तुम तो ब्रह्मचारी रहना चाहते थे फिर काशी

राजा की इस लड़की को क्यों जबर्दस्ती उठा लाये! जब ले ही आये, तुमने उसे घर में न रखकर, साल्व राजा के पास भेज दिया—और उसने इसको लेने से इसलिये इनकार कर दिया, क्यों कि तू इसे लाया था। यह तेरे कारण अनाथ हो गई है। इसलिये तुम ही इससे विवाह करो। तभी इसका उद्धार हो सकेगा। यह मेरी आज्ञा है।"

परशुराम का कोप देखकर भीष्म ने कहा—"महर्षि! इसके यह कहने पर कि यह पहिले से ही साल्व देश के राजा से प्रेम कर रही है, मैंने इसका विवाह अपने छोटे भाई से नहीं किया और साल्व के पास इसे भिजवा दिया। इसमें मेरा कोई दोष नहीं है। और मैं विवाह कर नहीं सकता हूँ। न भय के कारण, न लोभ के कारण, न वंचन के कारण, न मोह के कारण ही, मैं अपनी प्रतिज्ञा तोड़ूँगा।

परशुराम ने गुस्से में कहा—"तुम मेरी आज्ञा का उलंघन करते हो! यदि तुमने मेरी आज्ञा का पालन न किया, तो मैं तुम्हारा, और तुम्हारे मंत्रियों का नाश कर सकता हूँ—सावधान।"

भीष्म ने उसको कई प्रकार से शान्त करने का प्रयत्न किया। पर कोई फायदा न हुआ। आखिर भीष्म ने उसको प्रणाम करके कहा—"स्वामी, मैं छोटा हूँ। आप मेरे गुरु हैं। आपने मुझे चार तरह के अस्त्र दिये हैं। और अब आप मुझे युद्ध के लिए ललकार रहे हैं, इसका क्या कारण है!

"अगर मैं तेरा गुरु ही हूँ तो मेरी बात क्यों नहीं सुनते! तेरे कारण ऐसी परिस्थिति पैदा हो गई है कि इस लड़की से कोई विवाह नहीं करेगा। क्या इससे

करना धर्म विरुद्ध न होगा। मैं इस विषय में पीछे भी न हटूँगा।" भीष्म ने कहा।

"लगता है, तुम मुझ से युद्ध करने के लिये उतावले हो रहे हो। कल युद्ध के लिए तैयार होकर कुरुक्षेत्र में आओ, तुम्हें यम के पास भिजवाऊँगा।" परशुराम ने कहा।

भीष्म ने उसको प्रणाम किया, और हस्तिनापुर आकर सत्यवती से जो कुछ गुजरा था, कहा।—"विजयी होओ, बेटा," सत्यवती ने भीष्म को आशीर्वाद दिया। अगले दिन भीष्म ने ब्राह्मणों से आवश्यक संस्कार करवाये। युद्ध के लिए सन्नद्ध होकर, सफेद घोड़ों के, चान्दी के रथ पर समस्त आयुध रखकर, सफेद कपड़े धारण कर, सफेद छतरी के साथ, कुरुक्षेत्र गया।

विवाह करना तेरा कर्तव्य नहीं है! मैं तेरे हित की बात कर रहा हूँ। तुम इससे विवाह करो।" परशुराम ने कहा।

"स्वामी, इसने एक को अपना पति चुन लिया है। इसे मैंने एक बार छोड़ दिया है। ऐसी स्त्री को मैं कभी पत्नी के रूप में स्वीकार न करूँगा। आप मेरे गुरु हैं। ब्राह्मण हैं। तपस्वी हैं। आपको मारना मुझे पसन्द नहीं है। इसलिये आपसे प्रार्थना कर रहा हूँ। अगर आवेश में आपने क्षत्रिय धर्म का अवलम्बन कर मुझ पर अस्त्र उठाया, तो मेरा आपका संहार

तबतक, परशुराम, मुनि और ब्राह्मणों के साथ, कुरुक्षेत्र पहुँच चुका था। उसको देखते ही भीष्म ने शंख बजाया। उस समय गंगा ने अपने पुत्र भीष्म के पास आकर कहा—"बेटा, तुम परशुराम से क्यों युद्ध कर रहे हो! तुम ऐसा न करो। यह ठीक नहीं है।"

भीष्म ने हाथ जोड़कर कहा—"माँ, तुम जानती ही होगी, जो कुछ गुजरा है। अगर इसमें कोई गलती हो, तो मैं युद्ध न करूँगा।"

फिर गंगा ने परशुराम से भी कहकर देखा। पर परशुराम ने भी न सुना। तब भीष्म रथ से उतरकर, पैदल परशुराम के पास गया। उसने कहा—"महात्मा, मैं रथ में आया हूँ। मैंने कवच पहिना हुआ है। आप भी मेरी तरह रथ, कवच वगैरह ले आइये। ऐसा करने पर ही मेरे में, आपसे युद्ध करने के लिए उत्साह बढ़ेगा।"

"भीष्म, मेरे लिए भूमि ही रथ है। वेद ही घोड़े हैं। सावत्री, गायत्री, सरस्वती मेरे कवच हैं। वायु ही मेरा सारथी है।" परशुराम ने कहा!

तब भीष्म को ऐसा अनुभव हुआ जैसे परशुराम रथ में हो। परशुराम का मुख्य अनुचर, अकृतव्रण उसका सारथी बना हुआ था। भीष्म ने आश्चर्य करके, नमस्कार करके कहा—"स्वामी, आप मेरे समान हो, या मुझ से अधिक हो, मैं आपसे युद्ध करने जा रहा हूँ। आप मेरे गुरु हैं,

आशीर्वाद दीजिये कि इस युद्ध में मेरी विजय हो।"

"भीष्म, मैं तुम से बड़ा हूँ। इसलिये पैदल आकर मेरे सामने नमस्कार करना ठीक है। परन्तु मैं यह आशीर्वाद न दूँगा कि तुम इस युद्ध में विजयी हो। तुम्हे हराने के लिए ही मैं आया हूँ।" परशुराम ने कहा।

फिर दोनों में युद्ध प्रारम्भ हुआ।

होने को तो वह द्वन्द्व युद्ध ही था पर भयंकर युद्ध था। दोनों अस्त्र-शस्त्रों में प्रवीण योद्धा थे। उन दोनों ने एक

दूसरे को कई बार मूर्छित किया। तेईस दिन युद्ध चलता रहा, फिर युद्ध में किसी की विजय नहीं हुई।

तेईसवें दिन, रात को भीष्म को इस युद्ध के बारे में चिन्ता होने लगी। उसने अपने पितरों को कई बार प्रणाम किया।

"अगर मुझे युद्ध में जीतना है, तो आज रात मुझे देवता प्रत्यक्ष होंगे।" उसने सोचा। जैसे उसने सोचा था, उसको स्वप्न में आठ ब्राह्मण दिखाई दिये। एक बार, जब भीष्म युद्धक्षेत्र में मूर्छित हो गया था, तब इन ब्राह्मणों ने पकड़कर उसकी रक्षा की थी। उसको ऐसा लगा।

इन ब्राह्मणों ने भीष्म ने कहा—"डरो मत! इस युद्ध में तुम्हारी ही विजय होगी। हम आठों का शरीर तू ही है। प्रस्वापन अस्त्र का उपयोग तुम पिछले जन्म में तो जानते थे, इस जन्म में भूल गये हो। इसके उपयोग से परशुराम मरेगा तो नहीं, पर इस प्रकार गिर जायेगा जैसे मर गया हो।

चौबीसवें दिन, महा भयंकर युद्ध हुआ। बीच में, भीष्म ने प्रस्वापन नाम का अस्त्र परशुराम पर उपयोग करना चाहा। आकाश में, अदृश्य रूप में जो देवता युद्ध देख रहे थे, वे चिल्लाये—"नहीं, नहीं, भीष्म।" नारद ने भीष्म के समक्ष प्रत्यक्ष होकर कहा—"भीष्म, परशुराम बड़ा है। ब्राह्मण है, यही नहीं, तुम्हारा गुरु है। अगर तुमने इस अस्त्र का उपयोग किया तो उसका अपमान होगा। इसलिए इस अस्त्र का उपयोग न करो।"

भीष्म को अस्त्र का उपयोग करता देख, परशुराम ने भी ब्रह्मास्त्र छोड़ा, पर उसने भीष्म के साथ वह अस्त्र वापिस कर लिया। और उसके मुख से निकल गया—"बुद्धिहीन हो भीष्म से हार गया।"

[१२]

[शंख के पहाड़ी इलाके में, चन्द्रवर्मा और कपालिनी दोनों मिले। दोनों ने उसे मारने की सोची। सूर्योदय के समय, शंख पहाड़ के किनारे आया चन्द्रवर्मा ने उसे खड्ड में गिरा दिया। खड्ड में गिरने से पहिले शंख ने अपने जादू के डंडे से, पूजागृह को नींव सहित उखाड़कर, झील में फेंक दिया। उसके बाद.......]

मान्त्रिक शंख को "धोखा, धोखा" जोर से चिल्लाते और हाथ के जादू के डंडे को पूजा गृह की ओर फेंकते देखते ही, कपालिनी ठंढ-सी गई। इतने में शंख के पूजा गृह को हवा में उड़ता देख चन्द्रवर्मा अचम्भे में पड़ गया। वह अभी सम्भल भी न पाया था कि पूजा गृह झील में जा गिरा। वह भय और आश्चर्य से स्वयं कांप रहा था, किसी और को क्या देखता! इसलिये उसने कपालिनी का बगल में गिर जाना नहीं देखा।

"वर्मा" धीमी सी आवाज आने पर, चन्द्रवर्मा—इसतरह चौंका, जैसे बेहोशी चली गई हो। तब उसने कपालिनी की ओर देखा। कपालिनी एक बड़े-से पत्थर को पकड़कर उठने का प्रयत्न कर रही थी। चन्द्रवर्मा ने हाथ बढ़ाकर—उसको उठने में मदद दी।

कपालिनी के यह कहने पर चन्द्रवर्मा जान गया कि सारा प्रयत्न असफल हो गया था। झील में पूजा गृह के गिर जाने के कारण बड़ी बड़ी लहरें उठ रही थीं। उनकी ओर देखते हुये उसने कहा—"कपालिनी, क्या तुम यह सन्देह कर रही हो कि पूजा गृह के साथ अपूर्व शक्तिशाली शंख भी झील में गिर पड़ा है!"

"सन्देह नहीं, वर्मा, यह सच है। शंख के पूजा गृह में वह अपूर्व शक्तिवाला शंख ही नहीं, कितनी ही और महाशक्तिशाली चीज़ें थीं। मैंने केवल शंख ही चाहा था। पर वे वस्तुयें भी, जो तुझे अपने राज्य को, शत्रुओं के हाथ से लेने में मदद करतीं, उस पूजा गृह के साथ पानी में जा समा गई हैं, और हम दोनों वहीं हैं, जहाँ पहिले थे। कुछ नहीं पा सके।" कपालिनी ने कहा।

चन्द्रवर्मा उन वस्तुओं के बारे में सोचने लगा, जो मिलती मिलती उसके हाथ से निकल गई थीं। फिर मन को दृढ़ करके उसने कहा—"कपालिनी, जो हो गया सो हो गया, उसके बारे में, सोचने से

"वर्मा, जो दुर्भाग्य मुझे सता रहा था, लगता है, तुम्हें भी सता रहा है। शंख ने आखिरी क्षण में हमारे सब प्रयत्नों पर पानी फेर दिया। अब मैं और तू उसी असहाय स्थिति में हैं, जिसमें हम पहिले थे। अपनी जगह छोड़ी, कितनी ही मुसीबतें झेलीं, मरते मरते शंख के इस पहाड़ पर आये, पर हम दोनों को मिली वही निराशा, मिला वही दुर्भाग्य, कष्ट ही कष्ट और काम कुछ भी न बना।" कपालिनी ने कहा।

कोई फायदा नहीं है। यही काफ़ी है कि हमने एक क्रूर, निर्दय मान्त्रिक को मार दिया है।" फिर उसने आँखें इस तरह बड़ी कीं, जैसे कोई बात अचानक याद आ गई हो। "वह शंख तो पानी में गिर गया है! अब उस चीज़ को कहाँ खोजा जाये, जो तेरा बुढ़ापा हटाकर, यौवन दे सकती हो।"

"कहीं भी, कुछ भी खोजो पर उस शंख-सी दूसरी चीज़ नहीं मिलेगी, वर्मा।" कपालिनी ने निरुत्साहित होकर कहा—"मेरी आयु इस समय इतनी है कि किसी मामूली आदमी या स्त्री की नहीं होगी। इसी प्रकार जीते रहने की इच्छा भी मुझ में नहीं है। चाहे मैं कितने ही साल जीऊँ मगर अब ऐसी कौन-सी नई चीज़ बाकी रह गई है, जिसका आनन्द मैं उठाना चाहूँगी। अब मेरा सारा दुख तेरे ही बारे में है। चिन्ता, तेरे बारे में है। मेरे लिए तुमने बहुत मुसीबतें झेलीं, जान को भी जोखिम में डाला और अब मेरी हालत यह है कि मैं तुम्हारी मदद किसी तरह भी नहीं कर पा रही हूँ। लाचारी है। मुझे इसका अफ़सोस है।"

ये बातें सुनकर चन्द्रवर्मा को कपालिनी पर दया आई, उसके प्रति उसमें आदर-भाव भी पैदा हुआ। अपूर्व शक्तिवाले शंख को पाने के लिए वह सालों से प्रयत्न करती रही, और अब वह प्रयत्न असफल हो गया था। परन्तु उसको उसकी चिन्ता नहीं है, उसे यह चिन्ता ही सता रही है कि वह मेरी मदद किसी तरह न कर सकी। मेरे मत्थे कष्ट ही कष्ट पड़े।

"कपालिनी, तुमने मेरी बहुत मदद की है। जब मैं नदी में गिरा और बहता बहता तुम्हारे प्रदेश में पहुँचा, तो मुझे लगा कि

मैं जीवित न रहूँगा। परन्तु तुमने मुझे अपने घर में पनाह दी, मेरे कृतज्ञ होने के लिए वह सहायता ही काफ़ी है। खैर, अब हमें क्या करना है!" चन्द्रवर्मा ने कुछ सोचते हुए कहा।

कपालिनी ने पहाड़ की ओर देखकर कहा—"वर्मा, अब हम दोनों के रास्ते अलग हैं। मैं शेष जीवन इसी पहाड़ पर बिताऊँगी। जीवन की अन्तिम अवस्था निश्चिन्त हो, एक जगह बिता देना अच्छा है। घूमते फिरते रहने से कोई चैन न मिलेगी।"

"अच्छा, यदि यही ही तुम्हारी इच्छा है, तो इस पहाड़ पर, तुम्हारे लिए एक घर बनाने की मैं और काल्सर्प कोशिश करेंगे। चलो, पहाड़ पर चलें।" चन्द्रवर्मा ने कहा।

कपालिनी ने सिर हिलाया, जैसे उसे यह सुझाव पसन्द हो। चन्द्रवर्मा, पत्थरों में से जानेवाली पगडंडी से पहाड़ की ओर चला। उसके पीछे कपालिनी और काल्सर्प चले आ रहे थे। चन्द्रवर्मा जब उस पूर्व दिशा में स्थित पहाड़ के पास पहुँचा, जहाँ से शंख खड्ड में जा गिरा था, तो उसने झुककर खड्ड में देखा। उसे पत्थरों पर औंधे मुँह पड़ा शंख दिखाई दिया। जब उसे वह लगातार देखता रहा तो उसे ऐसा लगा, जैसे शंख का हाथ थोड़ा थोड़ा हिल रहा हो। जान न गई हो। तुरत चन्द्रवर्मा में उसके प्रति द्वेष, जाने कहाँ से उमड़ आया।

चन्द्रवर्मा ने पीछे आती हुई कपालिनी की ओर मुड़ कर कहा—"लगता है, उस पापी के शरीर में, थोड़े बहुत प्राण बाकी रह गये हैं। अगर कहीं वह जिन्दा हो उठा, तो हमारी खैर नहीं है। यह देखो, मैं

इस पत्थर से उसका सिर चूर चूर कर दूँगा।" कहते हुए उसने एक पत्थर उठाया, निशाना लगाकर, उसे खड्ड में फेंका।

थोड़ी दूर जाने के बाद वे उस जगह पहुँचे, जहाँ पहिले शंख का पूजागृह था। उस जगह जहाँ पूजागृह था, अब केवल नींव ही रह गई थी। चन्द्रवर्मा ने उन्हें दिखाते हुए कहा—"तेरे लिए घर इसी नींव पर तैयार किया जा सकता है। तुम इसके लिए मान ही जाओगी।"

कपालिनी इसके लिए मान गई। तबतक सूर्य काफ़ी चढ़ आया था। चन्द्रवर्मा ने पूर्व की ओर एक बार देखकर कहा—"बहुत भूख लग रही है। कुछ खाकर काम शुरु किया जाये तो कितना अच्छा हो। फलों के लिए फिर नीचे जाना होगा।" उसने पहाड़ के नीचे की ओर देख निश्वास छोड़ा।

यह देख कि चन्द्रवर्मा बहुत थक गया है, कपालिनी ने कालसर्प की ओर देखकर कहा—"कालसर्प, यह लो, मैं तुम्हारा मानव रूप तुम्हें वापिस दे देता हूँ। आज से तुम स्वतन्त्र हो, तुम जहाँ जहाँ चाहो वहाँ जा सकते हो।" कोई

मन्त्र पढ़कर मनुष्य की हड्डी से उसने कालसर्प का सिर छुआ। तुरन्त छः फुटा, हट्टकट्टा, तना-सा, बड़े बड़े हाथों, और पैरोंवाला एक नौजवान वहाँ प्रत्यक्ष हुआ। उनकी तरफ देखने लगा।

"कपालिनी, मैं तुम्हारी कृपा के लिए कृतज्ञ हूँ।" उस युवक ने कहा। फिर चन्द्रवर्मा की ओर मुड़कर उसने कहा—"मैं आपकी सहायता कभी न भूल पाऊँगा।" उसने उसको नमस्कार किया।

"मुझे नहीं मालूम, तब तुम्हारा क्या नाम था, जब तुम मनुष्य थे। मेरा एक

कपाल्िनी के पास आया। तीनों ने फल खाये। पासवाले नाले में पानी पिया।

थोड़ी देर विश्राम करने के बाद चन्द्रवर्मा और कालकेतु ने मिलकर शंख के पूजा गृह की नींव पर एक छोटा-सा घर बनाना शुरू किया। वह काम शाम तक पूरा हो गया।

उस घर में उन्होंने रात काटी। आधी रात हो गई, पर चन्द्रवर्मा को नींद न आई। वह अपने भविष्य के कार्यक्रम के बारे में सोचता रहा।

शत्रु है, जिसका नाम सर्पकेतु है। तुम चूँकि मेरे मित्र हो, इसलिये मैं तुम्हारा नाम कालकेतु रखता हूँ।" चन्द्रवर्मा ने कहा।"

"हाँ, मुझे कालकेतु नाम से ही बुलाइये। किसी न किसी दिन, मैं सर्पकेतु की बलि स्वीकार करूँगा और कालकेतु नाम सार्थक करूँगा।" उस नवयुवक ने कहा।

फिर कालकेतु पहाड़ से उतरा। झील के किनारे के बाग में गया और तरह तरह के फल तोड़कर, चन्द्रवर्मा और

कपाल्िनी की सहायता से अपूर्व शक्तिवाले शंख की मदद से अपना राज्य वापिस आने का उसका प्रयत्न असफल हो चुका था। वह सर्पकेतु जिसने क्रूरता से उसके पिता की हत्या करवा दी थी, अब सारे महिष्मती राज्य का राजा हो गया होगा। उसको जीतने के लिए कितनी ही बड़ी सेना की आवश्यकता थी। सेना इकट्ठी करने के लिये धन की ज़रूरत थी। कितनी ही और बातें थीं।

धन मुझे कहाँ से मिल सकेगा!

इसी सोच विचार में चन्द्रवर्मा को नींद न आई। वह बाहर चान्दनी में टहल

कदमी करने लगा। थोड़ी देर बाद कालकेतु ने उसके पास आकर पूछा—"इतनी रात में आप यहाँ क्या कर रहे हैं! किस समस्या के बारे में इतना सोच रहे हैं!"

"कालकेतु! मेरे सामने सभी समस्यायें ही हैं।" चन्द्रवर्मा ने कहा—"तुम तो जानते ही हो मैं कभी राजा था और अब जंगलों में रह रहा हूँ। सोचा था कि कपालिनी की मदद मिल सकेगी, परन्तु अन्तिम क्षण में पूजागृह के झील में गिर जाने के कारण सारे प्रयत्न असफल हो गये। सारी आशा मिट्टी में आ मिली। मैं अब किसके पास जाऊँ, किसकी सहायता माँगूँ! यही मैं सोच रहा हूँ। क्या तुम जानते हो यहाँ से कितनी दूरी पर मनुष्य रहते हैं!

"इन पहाड़ों में से, जंगलों में से, उत्तर दिशा की ओर सौ योजन जायें, तो गाँव, नगर दिखाई देंगे। मैं आपके साथ आना चाहता था, परन्तु कपालिनी को इस पहाड़ पर अकेला छोड़ना मुझे अच्छा नहीं लग रहा है। वह बहुत दिन जीवित न रहेगी। पहिले के घर में मृत, वर्तमान काल के गोल की सहायता से, मैं जरूर

आपके पास आ जाऊँगा।" कालकेतु ने कहा।

कालकेतु की बातों से चन्द्रवर्मा बिल्कुल उत्साहित न हुआ। इन पहाड़ों और जंगलों में से सौ योजन जाने के बाद, कहीं गाँव-बस्ती दिखाई देंगे। इस सौ योजन के सफ़र में कितनी ही भयंकर आपत्तियाँ मुझपर आयेंगी। यह भगवान ही जानते हैं।"

चन्द्रवर्मा सूर्योदय तक यही माथापची करता रहा। सूर्योदय होने पर, उसने झील में स्नान किया। फिर कपालिनी के पास

जाकर उसने अपनी यात्रा के बारे में कहा। कपालिनी ने उसको आशीर्वाद देकर कहा—"वर्मा, मेरा विश्वास है कि चाहे तुम्हें कितनी ही आपत्तियाँ सहनी पड़ें, आखिर, तुम शत्रुओं का संहार कर अपना राज्य वापिस जीत लोगे।"

फिर चन्द्रवर्मा, कपालिनी, और कालकेतु से विदा लेकर पहाड़ से उतरकर, उत्तर की ओर जंगल में जाने लगा। वह दुपहर तक चलता रहा। फिर थकान उतारने के लिये एक पेड़ के नीचे गया। उस वृक्ष के नीचे, वह लेटने के लिए समतल प्रदेश खोज रहा था कि पेड़ के नीचे करीब चार फुट बड़ी लोहे की जंजीर दिखाई दी। उस बड़े घने जंगल में, लोहे की जंजीर देखकर उसे आश्चर्य हुआ। वह जंजीर लेकर उसको गौर से देखने लगा। उस पर काफ़ी जंग चढ़ गया था। यह जंजीर इस जंगल में कैसे आई? अभी वह सोच ही रहा था कि उसको भयंकर भोंकने की आवाज सुनाई दी।

आवाज सुनते ही चन्द्रवर्मा म्यान में से तलवार निकाल कर खड़ा हो गया। दूरी पर पत्थरों पर कूदता फाँदता, दान्त निकाले एक बड़ा कुत्ता उसकी तरफ भागा आ रहा था।...."यह मामूली कुत्ता नहीं है। शायद कोई भयंकर राक्षस इस रूप में होगा।"—सोचते हुये उसने दायें हाथ में तलवार जोर से पकड़ी और बायें हाथ से जंजीर उठाई। उसने सोचा कि खतरे के वक्त, यह जंजीर भी जान बचाने के काम आयेगी। इतने में वह भूत कुत्ता सामने के झुरमुट में से फिर एक बार गरजा। मुख खोलकर बाण की तरह चन्द्रवर्मा की ओर आने लगा।

[अभी है।]

शत्रु की सहायता

विक्रमार्क तो हठी था ही। वह फिर पेड़ के पास गया—शव को उतार कर कन्धे पर डाल, चुप-चाप श्मशान की ओर चला।

तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा, एक भिखारी के लिए इतने कष्ट झेलना आश्चर्यजनक है। पर कई ऐसे भी हैं, जिन्होंने शत्रुओं की सहायता की है। इसके दृष्टान्त के रूप में, मैं तुझे मालावती की कहानी सुनाता हूँ।"

त्रिगर्त देश का राजा यशपाल था। उसके राज्य में, चन्द्रवर्मा नाम का एक सामन्त रहा करता था। चन्द्रवर्मा, प्राचीन चन्द्रवंश का था। वह, एक राजा के आधीन था।

चन्द्रवर्मा के दो लड़के थे और एक लड़की, जिसका नाम मालावती था। तीनों को अपने वंश पर गर्व था।

वेताल कथाएँ

त्रिगर्त के राजा, यशपाल का वंश, चंद्रवर्मा की तरह ऊँचा न था। परन्तु वह एक समर्थ शासक था। वह राज्य में अराजकता न होने देता, अगर कहीं होती भी तो उसे तुरन्त दबा देता।

एक बार, यशपाल को भेदियों द्वारा यह खबर मिली कि चन्द्रवर्मा, गंगा के पार के राजा से मिलकर, उसको गद्दी से उतारने का प्रयत्न कर रहा था। चन्द्रवर्मा का किला गंगा के इस किनारे ही था। राजा यशपाल ने शूरसिंह नाम के सेनापति को बहुत-सी सेना के साथ चन्द्रवर्मा के किले में भेजा।

चन्द्रवर्मा ने शूरसिंह का खूब स्वागत किया। उसने पूछा—"आप सब का इतनी बड़ी सेना के साथ आने का क्या कारण है! त्रिगर्त देश पर क्या शत्रु आक्रमण करने जा रहे हैं!"

शूरसिंह भी, घुमा फिराकर बातें करने में चतुर था। उसने चन्द्रवर्मा से कहा—"नहीं, ऐसी तो कोई बात नहीं है। परन्तु पता लगा है कि गंगा के पार के कुछ राजा युद्ध की तैयारी कर रहे हैं। अगर उन्होंने हमला किया तो आप ही को पहिले खतरा है। देखिये, महाराजा आपको कितना चाहते हैं। उनके परिवार का भी कोई यदि अपमान करे तो वे सह सकते हैं पर उनको यह गवाँरा नहीं कि आपके वंश पर कोई हाथ उठाये। राजा ने मुझे इतनी सेना देकर, आपके किले की रक्षा करने के लिए भेजा है।

चन्द्रवर्मा ने सिर झुकाकर कहा—"मैं महाराजा का बहुत ही कृतज्ञ हूँ।"

शूरसिंह ने चन्द्रवर्मा से यह भी कहा—यह भद्रकीर्ति है हमारे उपसेनापतियों में एक है। इसे और सौ हट्टे कट्टे सैनिकों को आपके परिवार की रक्षा के लिए

आपको दे रहा हूँ। ये रात दिन, आपकी रक्षा करेंगे। भद्रकीर्ति और उसके सैनिकों को किले में रख लीजिये। मैं और मेरी सेना, नदी के किनारे डेरे लगाकर रहेगी।"

यह बात सच थी कि चन्द्रवर्मा, शत्रु राजाओं से मिलकर षडयन्त्र कर रहा था। परन्तु अब वह कुछ न कर सकता था। भले ही ऊपर ऊपर से मीठी बातें उसने की हों, सच यह था कि शूरसिंहने, चन्द्रवर्मा को उसी के किले में कैदी बना दिया था। अगर कोई बाहर से चन्द्रवर्मा को देखने आता, चन्द्रवर्मा किसी से कोई बात करता, आखिर यहाँ तक कि वह अपने लड़कों से भी बातचीत करता, तो इसकी खबर जल्दी ही भद्रकीर्ति को मिल जाती थी। भद्रकीर्ति चौबीसों घंटे बिल्ली की तरह सारे किले में घूमता रहता। उसके सैनिक सब जगह उपस्थित रहते।

फिर भी चन्द्रवर्मा ने अपने प्रयत्न न छोड़े। वह अपने लड़कों से ही भेदियों का काम लेने लगा। सब प्रयत्न पूरे हो गये। नये साल के दिन चन्द्रपुरी में तरह तरह के उत्सव हुआ करते। रात भर उत्सव होते रहते। यह प्रबन्ध हुआ कि उस दिन अन्धेरी रात में शत्रुसेना, गंगा पार से आयेगी। और चन्द्रवर्मा की सेना उनका स्वागत इस तट पर करेगी। फिर उन दोनों सेनाओं को मिलकर शूरसिंह पर हमला करना था। और इसी समय, चन्द्रवर्मा के लड़कों को, किले में भद्रकीर्ति को मार देना था, और उसके सैनिकों को जैसे तैसे कैद में बन्द करना था।
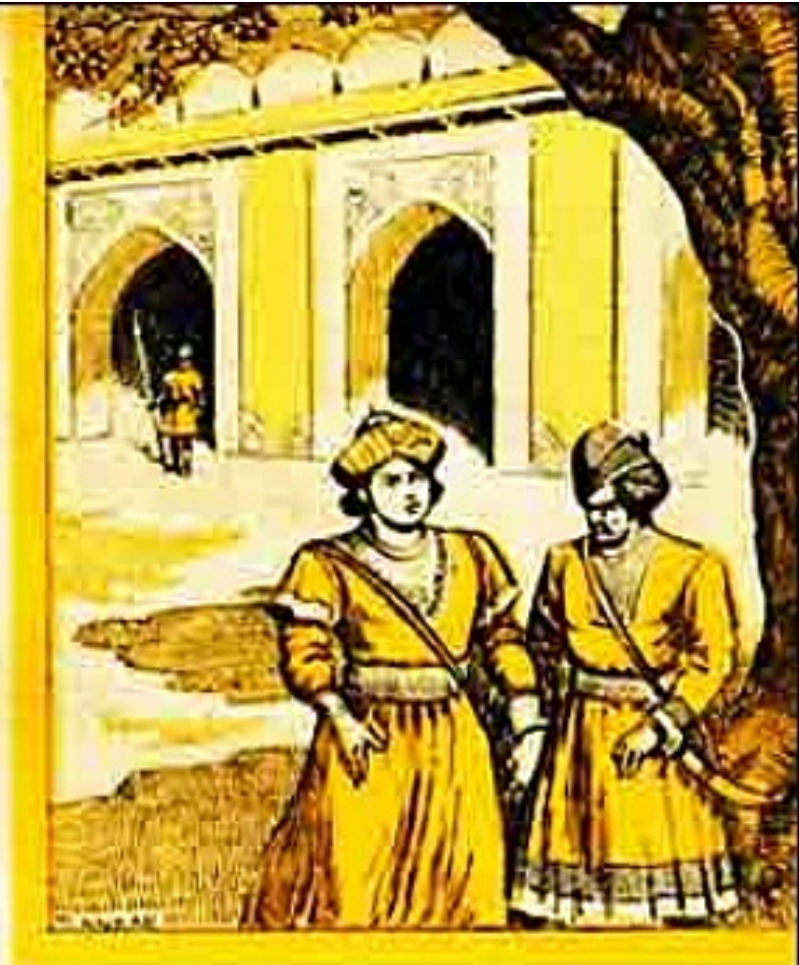
इस साजिश के बारे में भद्रकीर्ति को कुछ भी मालूम न था। यदि कभी उसका उन पर सन्देह भी था—तो, अब वह सन्देह जाता रहा। इसका मुख्य कारण

मालावती थी। जब से उसने उसको देखा, तभी से भद्रकीर्ति उस पर मोहित हो गया। भद्रकीर्ति जानता था कि उसका मालावती से प्रेम करना व्यर्थ था। क्योंकि वह जानता था कि चन्द्रवर्मा को अपने वंश पर कितना अभिमान था। चन्द्रवर्मा की लड़की का मामूली क्षत्रिय युवक से विवाह होना, स्वप्न में भी असम्भव था। इसीलिए यदि मालावती कभी उसकी ओर देखती तो वह फूला न समाता।

परन्तु मालावती ने भद्रकीर्ति से प्रेम करना शुरू कर दिया था। वह कभी भी किला छोड़कर कहीं और न गई थी। सिवाय भाइयों के वह और किसी को न जानती थी। और उस हालत में भद्रकीर्ति वहाँ अतिथि होकर आया। वह सुन्दर था। विनयशील था। उम्र में छोटा था, पर युद्ध भूमि में वह बहुत बहादुर था। होनहार था।

जब मालावती को मालूम हुआ कि ऐसे आदमी को नव वर्ष के पुण्य दिवस पर उसके पिता, और भाई मारनेवाले थे, तो उसको बहुत बुरा लगा। वह जानती थी कि भद्रकीर्ति शत्रु था। उसको उसने

किले में कैद भी कर रखा था। परन्तु उसने उससे प्रेम किया था।

उस दिन रात को, भोजन के बाद, बुर्ज पर खड़े होकर भद्रकीर्ति ने चारों ओर देखा, सर्वत्र शान्ति थी। अन्धकार में गंगा अस्पष्ट दीख रही थी। तट के, सैनिकों के डेरे नहीं दिखाई दे रहे थे।

वह मालावती के बारे में सोचता गंगा की ओर देख रहा था कि वहाँ उसको कुछ दिखाई दिया। अगर वे किश्तियाँ ही हों, तो उस समय उतनी किश्तियाँ वहाँ क्यों थीं ! यह जानने के लिए बुर्ज से वह उतर रहा था कि उसको चूड़ियों की आवाज सुनाई दी। उसके कुछ देर बाद मालावती ने उसके पास आकर कहा....
"मेरे पिताजी और भाई, आपको मारने के लिए इसी तरफ आ रहे हैं। आप, किले की दीवार से, जैसे भी हो, कूदकर भाग जाइये—"

किले की दीवार बिलकुल सीधी न थी.... एक तरफ झुकी हुई थी—भद्रकीर्ति दीवार के पत्थरों को पकड़ता, कभी गिरता, कभी फिसलता नीचे उतरा, और अपने डेरों की ओर भागा।

"यह तुम्हारी ही गलती है कि तुम षड्यन्त्र को नहीं ताड़ सके। मुझे पहिले ही इस बारे में मालूम हो गया था। इसलिए मैंने किले के फाटक पर सैनिक भेज दिये हैं ताकि चन्द्रवर्मा के सैनिक बाहर न आ सकें। तुम्हारे कथन के अनुसार तो शत्रु सेना भी गंगा पार से आती मालूम होती है। उनका "स्वागत" करने के लिए मैं अभी सेना भेजता हूँ। तुम नेतृत्व करो। मैं स्वयं किले में जाकर चन्द्रवर्मा की खबर लूँगा।"

भद्रकीर्ति कुछ सेना लेकर गंगा के किनारे गया। उसके पहुँचने के थोड़ी देर बाद एक सौ किश्तियाँ किनारे पर लगीं। उनमें से दो हज़ार शत्रुसेना उतरी। अन्धेरे में, किनारे सैनिकों को देखकर उन्होंने सोचा कि वे उनका साथ देनेवाले षड्यंत्रकारी ही थे। भद्रकीर्ति ने शत्रुओं से कहा—"तुम हथियार सौंप दो। षड्यन्त्र सफल हो गया है। शिविर हमारे वश में पहिले ही आ चुका है। अब हम सीधे शिविर आ सकते हैं।"

शत्रुओं ने सोचा कि ये बातें चन्द्रवर्मा की सेना का अधिकारी ही कह रहा था।

थोड़ी देर बाद, चन्द्रवर्मा और उसके लड़कों ने मालावती से आकर पूछा—"भद्रकीर्ति कहाँ है!"

"मुझे देखते ही, वह दीवार कूदकर भाग गया।" मालावती ने कहा।

चन्द्रवर्मा ने अपने सैनिकों द्वारा भद्रकीर्ति के सैनिकों को एक एक करके एक कमरे में बुलाया....और उन सब को उस कमरे में बन्द कर दिया। इस बीच भद्रकीर्ति, शूरसिंह से मिला, और जो कुछ उसे मालूम हुआ था, उसने उससे कह दिया।

उन्होंने, जो उसने कहा, वह किया। वे इस तरह भद्रकीर्ति के कैदी बना लिए गये। और शिविर की ओर ले जाये गये।

यह काम होते ही भद्रकीर्ति फिर किला वापिस गया। वहाँ चन्द्रवर्मा, और उसके पुत्र, आदि, कैदी बना लिए गये थे। शूरसिंह ने उनको मृत्युदण्ड भी दे दिया था।

भद्रकीर्ति ने शूरसिंह से कहा—"महा सेनापति, मैं आपसे एक प्रार्थना करना चाहता हूँ। मालावती ने मेरी प्राण रक्षा ही केवल न की, अपितु अपने पिता के राजद्रोह को शान्त करने में उसने मेरी बहुत मदद की। उसे जेल से छुड़वा दीजिये। मैं उसके साथ विवाह करने की सोच रहा हूँ।" उसने मालावती को छोड़ने की आज्ञा दी। उसको कैद से छुड़ाने के लिए भद्रकीर्ति स्वयं गया। मालावती कैद की कोठरी में दुखी बैठी थी।

"मालावती, मैं तुमको जेल से छुड़ाने के लिए आया हूँ।" भद्रकीर्ति ने कहा।

मालावती ने, एक बार उसकी ओर देखकर सिर फेर लिया। उसके मुख से कोई बात न निकली।

"क्या मैंने तुम्हारा कुछ बुरा किया है! तुम मेरी तरफ क्यों नहीं देखती! राजद्रोही की लड़की हो, इस बदनामी के बावजूद, मैं तुमसे शादी करना चाहता हूँ।" भद्रकीर्ति ने कहा।

इस पर भी उसने कुछ न कहा।

"जब तुम्हें मुझ से इतनी चिढ़ थी तो मेरे प्राणों की रक्षा क्यों की थी! इससे तो अच्छा होता कि मैं तुम्हारे पिता के हाथों मार दिया जाता। अब भी कुछ नहीं गया है, यह लो मेरी तल्वार, इससे मुझे मार दो।" भद्रकीर्ति ने कहा।

मालावती मुस्कराती मुस्कराती उठी, उसके पास गई। उसकी तलवार उसने ले ली। उसने तुरन्त उस तलवार को अपनी छाती में भोंक लिया, वह वहीं मर गई। भद्रकीर्ति उसके इस कार्य पर चकित हो उठा।

बेताल ने यह कथा सुनाकर पूछा—"राजा, मालावती ने क्यों आत्महत्या की थी? क्या उसने भद्रकीर्ति से प्रेम नहीं किया था? क्या वह इसलिए पछता रही थी कि उसने उसके प्राणों की रक्षा की थी? अगर प्रेम करती थी तो उससे शादी करने का मौका मिलने पर उसने आत्महत्या क्यों कर ली? इसका क्या कारण है? अगर तुमने जान बूझकर इसका उत्तर न दिया, तो तुम्हारा सिर टूट जायेगा।"

विक्रमार्क ने कहा—"यह सच है कि मालावती ने भद्रकीर्ति से प्रेम किया था। इसलिए उसने उसकी रक्षा की थी। पर केवल इसलिए कि उसने उससे प्रेम किया था, इसलिए वह कुलद्रोही भी हो गई थी, यह नहीं समझना चाहिये। वंश के गौरव का ख्याल जितना चन्द्रवर्मा को था उतना उसको भी था। प्रेम के कारण, वंश का सर्वनाश बच सकता था, परन्तु उसके साथ विवाह करके वह अपने वंश पर कलंक नहीं लगाना चाहती थी। वंश के खतम हो जाने के बाद, उसका अपने प्रेम के लिए जीवित रहना, भद्रकीर्ति से विवाह करना, आदि उसके लिए सम्भव न था, इसीलिए मालावती ने आत्महत्या कर ली।

राजा का इस प्रकार मौनभंग होते ही, बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया, और फिर पेड़ पर जा बैठा।

(कल्पित)

जैसे को तैसा

चीन के एक ग्राम में एक जमीन्दार रहा करता था, वह बहुत निर्दय था। उसके यहाँ कोई भी नौकर अधिक दिन तक काम न कर पाता था। वह जितने दिन उन्हें रखता, उनसे खूब काम लेता, जब उसको उनकी जरूरत न होती तो कोई बहाना करके उनको निकाल देता, और पैसा न देता। इस तरह उसने कितने ही नौकर रखे और उनको निकाल दिया।

उस गाँव में, उसके यहाँ कोई काम न करता। फिर भी दूर दूर से कुछ लोग आते, उसके यहाँ काम करते और बिना वेतन पाये भेज दिये जाते। यह सिलसिला बहुत दिनों से चल रहा था।

एक दिन दूर से कोई गरीब लड़का आया और उस जमीन्दार के यहाँ काम करने लगा।

"अरे भाई, मैं पहिले ही तुम्हें बता दूँ। अगर जो, मैंने कहा, तुमने न किया, तो तुम्हें एक पैसा न दूँगा और काम से भेज दूँगा। यह अच्छी तरह जान लो।" जमीन्दार ने उस लड़के से कहा।

"इसमें क्या धरा है—हुक्म का न पालन करना गलत ही तो है!" नये नौकर ने कहा।

जब से वह काम पर आया था, सवेरा होने से पहिले वह काम शुरु करता और अन्धेरा होने तक करता रहता। कभी आराम न करता।

एक दिन जमीन्दार ने नौकर से कहा—"पहाड़ पर बाँसों पर पत्ते लग गये हैं। कल बैल को ले जाकर उन्हें खिलाना। देखना कहीं तुम पत्ते तोड़कर न देना, उसे ही पेट भर खूब खाने देना।"

राम मोहन

"इसमें क्या धरा है!—" नौकर ने कहा।

अगले दिन सवेरे, वह बैल को बासों के पास ले गया। उसने, उसको एक बाँस से बाँध दिया। फिर वह उसको एक छड़ी से मारते हुये चिल्लाया—"चढ़ो, ऊपर। चढ़ते क्यों नहीं!" बैल मार न खा सका, बिदक-सा गया। और बाँसों के चारों और भागने लगा। नौकर उसे लगातार मारता जाता था।

उस तरफ आने जानेवाले लोग यह देख हँसे। जल्दी ही यह बात जमीन्दार तक भी पहुँची। वह वहाँ भागा भागा पहुँचा—"क्या तुम बैल को मारकर ही दम लोगे! पागल कहीं का!"

"आप नहीं जानते, ठहरिये मालिक। इसे इतना घमँड! मैंने चढ़कर पत्ते खाने के लिए कहा पर यह चढ़ता ही नहीं है। ज़िद कर रहा है। जब तक इसे खूब नहीं पीटूँगा तब तक इसे अक़्ल न आयेगी।" नौकर ने कहा।

"बस, बस, तू उसे कुछ मत खिला, उसे घर ले जा। तूने नाक में दम कर रखा है।" जमीन्दार ने कहा।

इसके बाद, जमीन्दार नौकर से चिढ़ता रहा। उसको जैसे भी हो कोई बहाना करके, बिना पैसे दिये भेजने का उसने निश्चय किया। बहाने के लिए माथापच्ची करने लगा।

एक दिन उसने अपने नौकर से कहा।" हमारे घर पर खपरैल की छत देख रहे हो न—वह होने को तो बहुत बड़ी है पर किसी काम की नहीं। कल उस पर पौधे लगाओ।"

"इसमें क्या धरा है!" नौकर ने कहा।

अगले दिन सवेरे वह छत पर चढ़ गया, और छत तोड़ने लगा। खपरैल के कुछ टुकड़े घर में जा गिरे, जहाँ जमीन्दार सो रहा था। उसने बाहर आकर, सिर ऊपर उठाकर कहा—"क्यों यों खपरैल तोड़ रहे हो! तुम्हें हो क्या गया है! उतरो नीचे।"

"आप कुछ नहीं जानते! ठहरिये पौधे लगाने के लिए सारी छत खोद रहा हूँ।" नौकर ने कहा।

"अरे भला हो तेरा....तुम पौधे न लगाओ पहिले छत से उतरो।"

जमीन्दार न सोच सका उस जैसे आदमी का क्या किया जाय!

गरमियाँ आईं। पानी की कमी के कारण खेत खराब होने लगे।

उस हालत में, जमीन्दार ने अपने नौकर से कहा—"अरे गरमी में हमारे सब खेत खराब हो रहे हैं, कल हमारे खेतों को घर में लाकर रखो।"

जमीन्दार ने सोचा था कि यह कहने से वह चला जायेगा।

"इस में क्या धरा है!" नौकर ने कहा।

जब अगले दिन जमीन्दार उठा तो उसको किसी का शोर करना सुनाई दिया। वह बाहर आया। गुस्से में इधर उधर देखा।

नौकर दीवार तोड़ रहा था। उसने एक दरवाजा तक निकाल दिया था। दीवार थोड़ी थोड़ी गिर गई थी। और बहुत कुछ गिरनेवाली थी।

"अरे क्या कर रहे हो! क्या तुम पागल हो गये हो! ठहरो।" जमीन्दार ने कहा।

"आप कुछ नहीं जानते, ठहरिये।" कहकर नौकर पहिले की तरह दीवार तोड़ता जा रहा था।

"यह काम बन्द करो, बन्द करते हो कि नहीं!" जमीन्दार ने खौलते हुए चिल्लाकर कहा।

"आप ही ने तो कहा था कि खेत घर ले आओ!" नौकर ने कहा।

"क्या मैंने तुम्हें दीवार तोड़ने के लिए कहा था!"

"अगर यह दीवार न हटाई गई तो, उतने बड़े खेत घर में कैसे आ सकेंगे!" नौकर ने कहा।

अब जमीन्दार को अक्ल आई, उसने उसको बहुत-सा रुपया देकर भेज दिया।

जिसकी चीज उसीको

अपरीक्षित कारकम्

किसी कुण्ड में महामच्छ दो
रहा कभी करते थे बंधु,
सहस्रबुद्धि औ' शतबुद्धि थे
नाम उन्हीं के है प्रियबंधु।

एकबुद्धि नामक मेंढक भी
वहीं बनाये था निज गेह,
तीनों ही रहते थे सुख से
रखते थे आपस में स्नेह।

एक बार मछुए कुछ गुजरे
लादे कंधों पर निज जाल,
कुण्ड देखकर वे सब बोले—
'डालेंगे इसमें कल जाल।'

यह सुनते ही मच्छों के औ'
मेंढक के भी सूखे प्राण,
बोला मेंढक—"मित्रो, बोला
हो अब कैसे इनसे त्राण?"

हँसकर कहा सहस्रबुद्धि ने—
"अरे, व्यर्थ होना भयभीत,
इन मछुओं से बचने की तो
सभी जानता हूँ मैं रीत!"

शतबुद्धि ने भी कहा यह सुन—
"हाँ, हाँ, चिन्ता है बेकार,
अवसर आने पर देखेंगे
कौन हमें सकता है मार!

जहाँ किरण का या समीर का
भी न कभी हो सके प्रवेश,
बुद्धिमान की बुद्धि वहाँ भी
कर जाती है तुरत प्रवेश।"

मेंढक बोला—"भलेमानसो,
तुम्हें मुबारक हो यह ठौर,
मैं जाता हूँ अभी यहाँ से
कहीं खोजने आश्रय और।"

श्री "भारतीभक्त"

दिवस दूसरे उसी कुण्ड में
जब मछुओं ने डाले जाल,
चली एक ना उन मच्छों की
पड़े काल के दोनों गाल।

कथा चक्रधर के मुँह से यह
सुनकर बोला सुवर्णसिद्धि तब—
मैं भी तुमसे एक कथा हूँ
कहता, तुम तो सुनो उसे अब।

एक जुलाहे को वृक्ष-देव ने
कहा—"माँग, मनचाहा माँग!"
कहा जुलाहे ने—"घरनी से
पूछूँगा तब लूँगा माँग।"

एक मित्र ने कहा उसीको—
"मित्र, माँग लो तुम अब राज्य,
घरनी से कुछ पूछोगे तो
बिगड़ेगा ही सारा कार्य।"

किंतु जुलाहे ने न दिया तब
उसकी बातों पर कुछ ध्यान,
पूछा घरनी से—"प्रिय, बोलो
माँगू मैं कैसा वरदान!"

घरनी बोली—"चार हाथ औ'
दो सिर अब लो यदि तुम माँग,
दूनी होती आमदनी औ'
सोये भाग्य उठेंगे जाग।"

यह सुनकर वह मूर्ख जुलाहा
माँग वहीं बैठा वरदान,
चार हाथ औ' दो सिर लेकर
बना तुरत ही दैत्य समान।

लेकिन इससे लाभ हुआ क्या
उलटे पड़ी बहुत ही मार,
भूत समझ उनको लोगों ने
पीट पीटकर डाला मार।

चक्रधर ने कथा यह सुनकर
कहा—"भोगने दो अब कष्ट,
व्यर्थ हवाई किले बनाकर
किया सभी कुछ मैंने नष्ट।
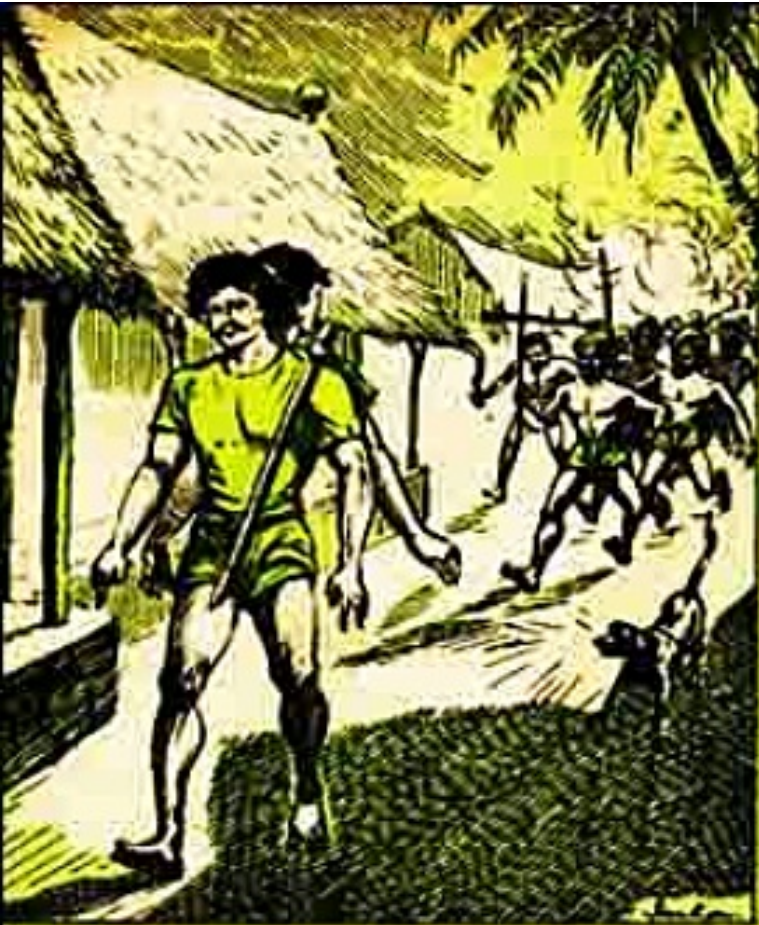
एक कृपण ब्राह्मण रहता था
गुज़र चलाता भीख माँगकर,
बचे हुए सत्तू को रखता
एक घड़े में सदा टाँगकर।

एक रात वह लगा सोचने—
सत्तू से जब घड़ा भरेगा,
और अचानक तभी देश में
जब अकाल भी बड़ा पड़ेगा:

तब सत्तू को सौ रुपये में
बेच, बकरियाँ दो लाऊँगा,
बच्चे देंगी वे जिनसे मैं
रुपये खूब कमा पाऊँगा,

उनसे गायें, फिर भैंसें औ'
आगे चलकर घोड़ियाँ,
जिन्हें बेचकर लाऊँगा घर
मुहरों की दो बोरियाँ,

उनसे फिर बनवाऊँगा मैं
महल बहुत ही ऊँचा एक,
रूपवती कन्या ब्याहूँगा
होगा जिससे लड़का एक:

पुस्तक पढ़ते-पढ़ते ही मैं
पत्नी को दूँगा आदेश,
लेकिन कभी भूल से भी यदि
भंग करेगी वह आदेश:

तो फिर मैं गुस्से में भरकर
मारूँगा ऐसी झट लात...
इतना कह वह उसी जोश में
उठा और मारी झट लात—

फूट गया वह घड़ा उसी क्षण
सत्तू सारे गये बिखर,
ध्यान टूटते ही सपने भी
सारे उनके गये बिखर!

व्यर्थ हवाई किले बनाकर
जो समय आप ही करता नष्ट,
उसका होता हाल यही है—
मंसूबे सब होते नष्ट!

मनोरंजक स्वप्न

एथेन्स में एक अमीर रहा करता था। उसके एक लड़की थी। उसका नाम हेर्मिया था। उसकी एक सहेली थी, जिसका नाम हेलेना था। हेर्मिया के सयानी होने पर, उसके पिता ने, उसके लिए एक वर निश्चित किया। उसका नाम डिमिट्रियस था। परन्तु हेर्मिया ने डिमिट्रियस से प्रेम न किया था। लिसान्डर नाम के किसी और युवक से वह प्रेम किया करती थी।

डिमिट्रियस, जो हेर्मिया से शादी करने की सोच रहा था कभी हेलना से प्रेम किया करता था। परन्तु जब से, उसने हेर्मिया को देखा उसका दिल बदल गया। यही नहीं, हेर्मिया का पिता भी, डिमिट्रियस पर अभिमान करने लगा।

परन्तु हेर्मिया ने साफ़ साफ़ कहा—"मैं डिमिट्रियस से शादी न करूँगी—लिसान्डर से ही शादी करूँगी।"

उन दिनों, एथेन्स शहर में यह कानून था कि लड़कियाँ पिता द्वारा निश्चित वर से ही शादी करें। पिता की आज्ञा का धिक्कार यदि वे करतीं, तो उनको या तो मरण दण्ड दिया जाता नहीं तो आजीवन अविवाहित, योगिनी बनकर रहना पड़ता।

हेर्मिया के पिता ने राजा से अपनी लड़की के बारे में शिकायत की। "तुम, क्यों नहीं डिमिट्रियस से शादी कर लेती!" राजा ने भी यह सलाह दी। पर हेर्मिया न मानी।

"तुम्हें अपना निश्चय बदलने के लिए चार दिन का समय देता हूँ। अगर तब भी तुम अपने हठ पर रही तो कानून के

विलियम शेक्सपियर

अनुसार तुम्हें सजा देनी ही होगी।" राजा ने उनको यह कहकर भेज दिया।

हेर्मिया कुछ न सोच पाई कि क्या किया जाय तब उसके प्रेमी लिसान्डर ने एक सलाह दी। "नगर से सात कोस दूरी पर मेरी बड़ी मौसी रहती है। वह बहुत धनी है। मुझे अपना पुत्र समझती है। अगर हम लुके छुपे, जैसे तैसे वहाँ पहुँच गये तो हमारे विवाह में कोई रुकावट न डाल सकेगा। इसलिये कल रात को नगर से एक कोस दूरवाले जंगल में चले आओ। मैं तुम्हारी वहाँ प्रतीक्षा कर रहा हूँगा।"

हेर्मिया की सहेली, हेलेना तब भी डिमिट्रियस से प्रेम कर रही थी। उसे इस बात का भी दुख था कि उसका डिमिट्रियस, हेर्मिया से विवाह कर रहा था। उसका दुख कम करने के लिये हेर्मिया ने उससे कहा—"आज रात को मैं, लिसान्डर के साथ नगर छोड़कर जा रही हूँ। तब डिमिट्रियस फिर तुमसे विवाह करेगा, दुखी मत हो।" उसने अपनी सहेली से कहा।

हेलेना ने यह बात जाकर डिमिट्रियस से कहदी। हेलेना जानती थी कि ऐसा करने से हेर्मिया की योजना असफल हो सकती थी। पर उस बिचारी ने यह भी सोचा कि ऐसा करने से डिमिट्रियस का मन फिर उसकी तरफ़ लगेगा।

उस जंगल में जहाँ लिसान्डर और हेर्मिया ने मिलने की ठानी थी भूतों का राज्य था। उसका एक राजा था और रानी थी। उन दोनों में, कुछ समय से झगड़ा हो रहा था। इसका कारण यों था। भूतों की रानी एक लड़के को पाल रही थी। राजा ने उस लड़के को अपना नौकर बनाने के लिए कहा। रानी ने उस

लड़के को, इस काम पर रखने से इन्कार कर दिया।

कुछ भी हो, भूतों के राजा ने अपनी पत्नी का अभिमान चूर करने का निश्चय किया। उसने अपने एक नाम के सेवक को बुलाकर कहा—"अरे, फलानी जगह नीले रंग का फूल है। उसे लाओ। जब रानी सो रही हो तब अगर उस फूल के रस को उसकी पलकों पर लगाया गया, तो नींद से उठते ही वह जिस जन्तु को देखेगी, उसे मोह लेगी। उसका अपमान कर हम उस लड़के को ले लेंगे, जिसे वह पाल रही है। मैं फिर दवा का असर हटा दूँगा।"

फूल लाने के लिए एक निकला। इस बीच भूतों की राजा की जगह डिमिट्रियस और हेलेना आये।

यह जानते ही कि हेर्मिया, इस जंगल में, आज रात को लिसान्डर से मिलेगी और उसके साथ चली जायेगी डिमिट्रियस, उनकी योजना को भंग करने आया। उसके पीछे हेलेना भी आई। वे जंगल में बहुत देर तक घूमते रहे, पर उनको कहीं हर्मिया, और लिसान्डर न दिखाई दिये। यूँ तो डिमिट्रियस खिझा ही हुआ था, और हेलेना को पीछा करता देख उसकी खीझ और भी बढ़ी। "तुम क्यों शनि की तरह मेरे पीछे चली आ रही हो! जाओ, तुम्हें देखते ही मुझे घृणा आती है।" उसने कहा।

"मैं, तुमसे प्रेम किये बगैर नहीं रह सकती। क्या मैं पालतू कुत्ते के बराबर भी नहीं हूँ!" हेलेना ने कहा।

"अगर तुम इस तरह मेरे पीछे पड़ी रही तो मैं तुम्हारी जान भी ले सकता हूँ, समझे।" डिमिट्रियस भागने लगा।
"मैं मरने के लिए भी तैयार हूँ।" कहती हेलेना उसके पीछे दौड़ी।

जा सकता है। वे कहाँ सोते हैं, यह पता लगाओ, और जब वह लड़का सोये तो उसकी आँखों पर यह रस लगा देना। वह उठते ही उस लड़की को देखेगा, और कुत्ते की तरह उसके पीछे पीछे घूमेगा। तुम तड़के मुझे मिलना, मज़ा देखेंगे।"

एक पहिले उस जगह गया, जहाँ भूतों की रानी सो रही थी, उसकी आँखों पर फूलों का रस लगाया, फिर वह ऐथेन्सवालों की खोज में निकला। दुर्भाग्य से उसको हेर्मिया और लिसान्डर एक जगह दिखाई दिये।

भूतों के राजा ने, अदृश्य होकर उन दोनों की बातचीत सुनी। "इस लड़के को सजा देनी पड़ेगी जो, एक लड़की को इस प्रकार दुत्कार कर भागा जा रहा है।" उसने सोचा।

इतने में एक फूल लेकर वहाँ आया।

भूतों के राजा ने उससे कहा—"अरे इस फूल के रस को रानी की आँखों पर लगाना। वह फलानी जगह सो रही है। एक और बात है, इस जंगल में, एक लड़का, और एक लड़की घूम रहे हैं। वे ऐथेन्स के हैं, यह उनके कपड़ों से जाना

वे दोनों जंगल में मिले और काफी दूर चले। परन्तु वे रास्ता भटक गये। उन दोनों ने जंगल में रात काटनी चाही, हेर्मिया की जगह से कुछ दूरी पर लिसान्डर लेटा हुआ था। दोनों सो रहे थे। उस समय एक वहाँ आया। उसने सोचा कि उसके मालिक ने इसी जोड़ी के बारे में कहा था। वह लिसान्डर की आँखों में रस लगाकर, अपने रास्ते चला गया।

हेलेना, डिमिट्रियस के साथ न चल सकी। पीछे रह गई और वह उसको

पैदल ही जंगल में खोजने लगी। वह ढूँढ़ती ढूँढ़ती उस जगह पहुँची, जहाँ लिसान्डर सो रहा था। उसने उसे पहिचान लिया। यह जानने के लिए कि वह सो रहा था, या डिमिट्रियस द्वारा मार दिया गया था, उसने उसको उठाया। लिसान्डर ने, आँखें खुलते ही हेलेना को देखा और फूल के रस के प्रभाव के कारण उससे प्रेम करने लगा।

हेलेना, यह देख घबराई। उसने सोचा कि लिसान्डर उसका परिहास कर रहा था। उसे अपने पर ही चिढ़ आई, वह वहाँ से चली। लिसान्डर भी उसके पीछे दिवाने की तरह चलने लगा।

इतने में भूतों के राजा को पक की गलती मालूम हो गई। वह घूमता घूमता उस जगह पहुँचा, जहाँ डिमिट्रियस सो रहा था। हेलेना से पीछा छुड़ाकर, डिमिट्रियस हेर्मिया के लिए बहुत देर तक घूमता रहा। घूम घामकर थक-थका गया, और एक जगह सो गया।

यही मौका देख, भूतों के राजा ने, डिमिट्रियस के आँखों पर भी फूल का रस लगा दिया। जब उसने आँखें खोलीं, तो उस तरफ हेलेना चली आ रही थी, उसके पीछे लिसान्डर भी था।
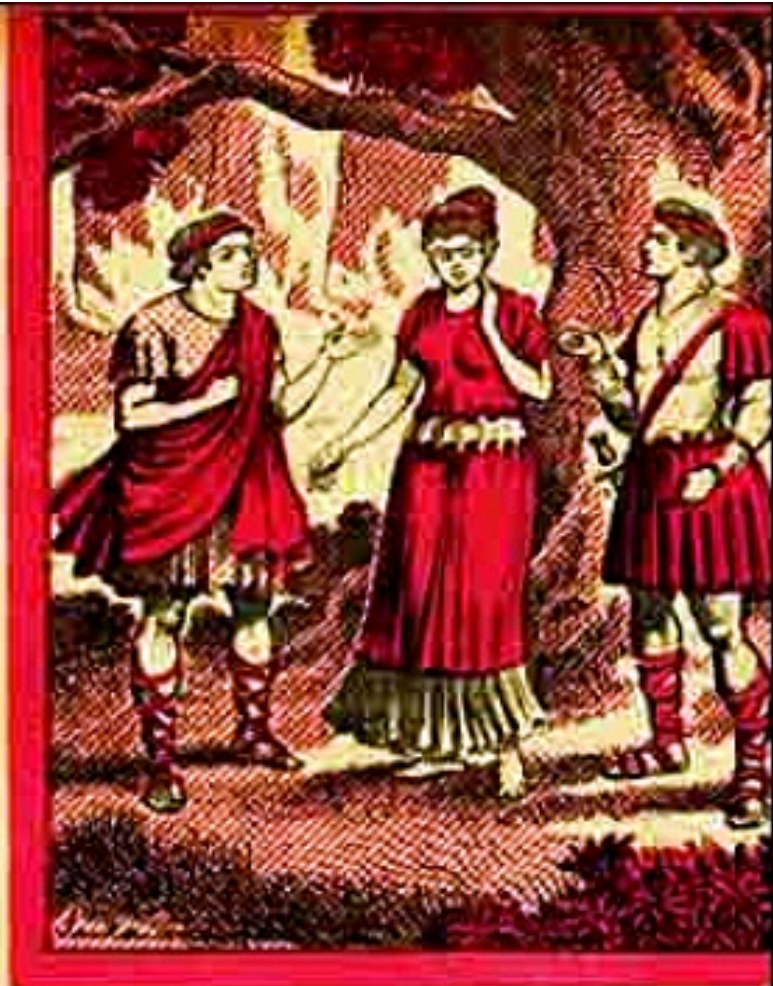
रस के प्रभाव के कारण, डिमिट्रियस भी हेलेना से प्रेम करने लगा। हेलेना, अपने आँखों और कानों पर विश्वास न कर सकी। जो तबतक, हेर्मिया से प्रेम कर रहे थे, उन दोनों को उससे प्रेम करता देख, हेलेना को यह सब कुछ नाटक-सा लगा।

हेर्मिया भी, अपने प्रेमी लिसान्डर को खोजती वहाँ आई। उसे कुछ समझ में नहीं आया क्यों लिसान्डर उसको छोड़कर, हेर्मिया के पीछे लगा हुआ था।

दोनों सहेलियाँ एक दूसरे पर सन्देह करके झगड़ने लगीं। दोनों आदमी हेलेना के लिए आपस में लड़ने लगे। पक ने अपनी माया के प्रभाव से ऐसा किया कि वे दोनों एक दूसरे को न देख पाते थे, न एक दूसरे को पकड़ ही पाते थे।

आखिर सब थक गये—दोनों युवतियाँ और दोनों युवक सो गये। उस समय पक ने आकर लिसान्डर की आँखों पर लगे रस का असर हटाने के लिए एक और रस लगाया। उसके प्रभाव से लिसान्डर का हेर्मिया के प्रति प्रेम फिर जाग पड़ा! डिमिट्रियस, फूल के रस के प्रभाव के कारण हेलेना से प्रेम करने लगा। उन दोनों के विवाह की समस्या इस तरह हल हो गई।

और उधर वन में भूतों के राजा की इच्छा भी पूरी हो गई। भूतों की रानी जब सोकर उठी तो उसने बाहर आकर गधे के सिरवाले एक मनुष्य को देखा। और रस के प्रभाव से वह उससे प्रेम करने लगी। वह आदमी एक जुलाहा था, जो उस दिन रात को जंगल में फंस गया था। पक ने उस पर गधे का सिर लगा दिया था।

सवेरे ही, भूतों का राजा अपनी पत्नी की जगह आया, गधे के सिरवाले आदमी को देखकर उसने हल्ला किया। भूतों की रानी यह देखकर शर्मिन्दा हुई। पति से समझौता करने के लिए, उस लड़के को, जिसे वह पाल रही थी, पति का नौकर बनाने के लिए वह राजी हो गई।

आप यह सन्देह कर सकते हैं कि कहीं ऐसी बातें भी हो सकती हैं। अगर ऐसा लगे कि यह सच नहीं है—गुजरी हुई बात नहीं है, तो यह समझना कि यह एक मनोरंजक स्वप्न है।
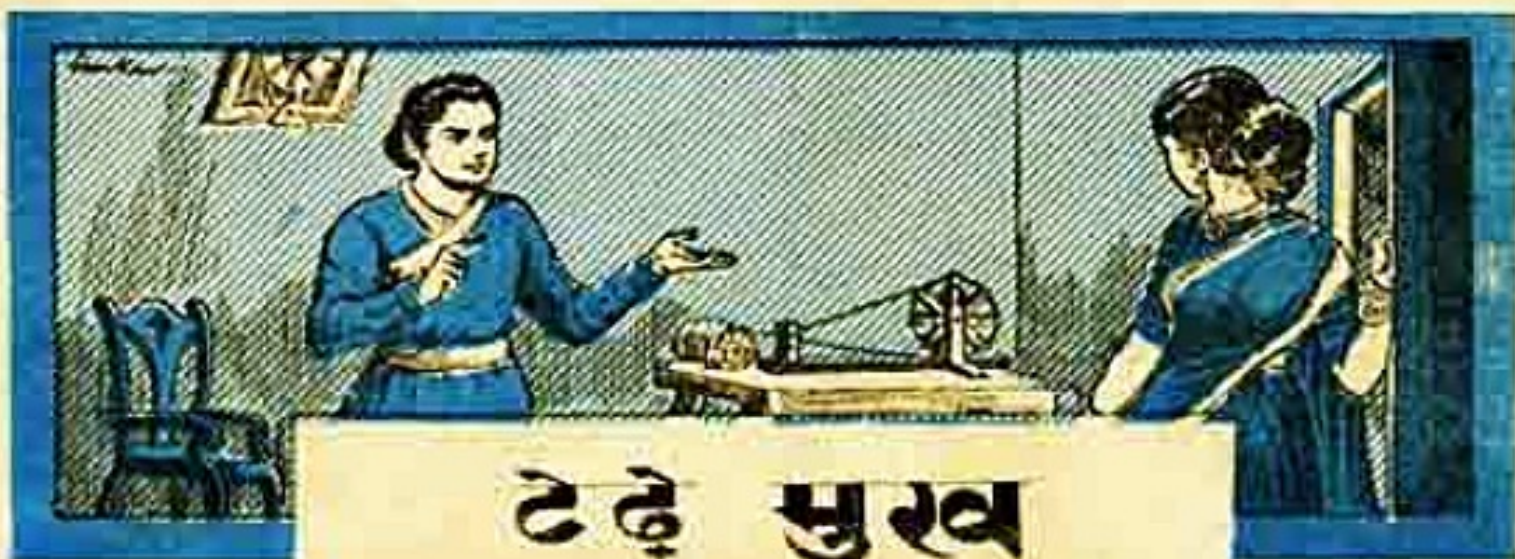
टेढ़े मुख

एक अमीर की एक सुन्दर लड़की थी। सौभाग्य से उसका विवाह सम्बन्ध अच्छे घर में हुआ। वर यद्यपि दूसरे प्रान्त का था, तो भी अमीर और सुन्दर था। लड़की को लड़का और लड़के को लड़की पसन्द आई। इसलिए उन दोनों की धूम धाम से शादी हुई। माँ बाप ने लड़की को उसके ससुराल भेज दिया।

कुछ मास उनकी गृहस्थी खूब आनन्द से चली। एक दिन, पति ने एक चरखा, और टोकरा भर पूनियाँ पत्नी के सामने रखकर कहा—"रोज, सूत कातो, सूत समान होना चाहिये।"

पत्नी ने मुँह लम्बा करके कहा—"क्या है! क्या मुझे रोज चरखे पर सूत कातना होगा!"

"हाँ! मुझे साल में दो जोड़ी धोती और चादर तेरे काते हुये सूत से बनवाने हैं।" पति ने कहा।

"मैं तो सूत कातना नहीं जानती।" पत्नी ने कहा।

अगर कामकाजी स्त्री कहे कि सूत कातना नहीं आता है—तो पति विश्वास नहीं करता।—उसका तो यही ख्याल रहता है कि आलस्य के कारण इधर उधर के बहाने पत्नी बना रही है।

"बस करो, ऊँटपटांग बातें न करो, रोज छः चैले कातकर दिखाओ।" पति यह कहकर चला गया।

पत्नी चिन्तित हो, चरखे के सामने बैठकर, सूत कातने का प्रयत्न करने लगी। अभ्यास था नहीं, इसलिए कहीं सूत मोटा निकलता, तो कहीं पतला। कहीं गाँठ गाँठ-

पत्नी को बड़ी फ़िक्र हुई। उसके मायके में चरखा ही नहीं था, इसलिए उसने कभी सूत न काता था। परन्तु उसके पति के प्रान्त में हर स्त्री सूत कातती थी। इसलिए वहाँ के लोग उस स्त्री का आदर नहीं करते थे, जो सूत कातना नहीं जानती थीं। पति के जाने के बाद, पत्नी अपने मकान के बगलवाले मैदान में जाकर एक पत्थर पर जा बैठी।

कुछ देर बाद, उसे जाने कहाँ से कुछ बातें और हँसना सुनाई दिया। चारों ओर जो देखा, तो कहीं कोई न था। जब उसने गौर किया, तो ऐसा लगा कि वे बातें और हँसी, उस पत्थर के नीचे से ही आ रही थीं।

पत्नी पत्थर पर से उठी। बहुत मुश्किल से, उसने पत्थर को एक तरफ़ हटाया। उसके नीचे उसको ऐसा छेद दिखाई दिया जिसमें से वह अन्दर जा सकती थी। वह उस छेद में गई। अन्दर एक विशाल कमरा था। उस कमरे में छः बौनी स्त्रियाँ बैठी थीं। वे देखने में छः सात वर्ष की लड़कियों की तरह थीं। सब के सामने चरखे थे। वे स्त्रियाँ हवा

सा। शाम को जब पति वापिस घर आया, तो वह एक तोला सूत भी न कात सकी।

पति, उस तागे को देखकर आग-बबूला हो उठा।

"मजाक है। अगर तुमने ऐसा ही किया, तो मैं तुम्हें छोड़कर, किसी और से शादी कर लूँगा। क्या समझ रखा है! मैं कल सवेरे काम पर शहर जा रहा हूँ। दस दिन बाद वापिस आऊँगा। इस बीच तुम टोकरा भर पूनियाँ कातो। अगर तुमने यह न किया तो मैं वही करूँगा जो मैंने कहा है।" पति ने पत्नी से कहा।

की तरह चरखे चला रही थीं। जल्दी जल्दी पूनियाँ कात रही थीं। और मकड़ी के जाल की तरह महीन सूत निकालकर एक तरफ़ इकठ्ठा कर रही थीं।

उन छहों स्त्रियों के मुख एक तरफ़ झुके हुए-से थे। यह उस पत्नी ने देखा। वे यद्यपि इतनी तेजी से सूत कात रही थीं, फिर भी वे आपस में बातें कर रही थीं, और टेढ़े मुख करके हँस रही थीं।

पत्नी ने उनसे कहा—"आप कौन हैं, मैं नहीं जानती। पर आपका कातना देखकर मुझे आश्चर्य हो रहा है। आपके हुनर में, यदि सौवाँ हिस्सा भी मैं जानती, तो मुझे फ़िक्र न होती।" कहती पति की बातें याद करके वह फूट-सी पड़ी।

उन छहों स्त्रियों ने चरखा चलाना छोड़कर पूछा—"क्या आपत्ति आ पड़ी है तुम पर!"

उसने, अपने पति की शर्त के बारे में उन्हें बताकर कहा—"अगर उनके घर आने से पहिले टोकरा भर पूनियाँ न कात डाली, तो मेरी खैर न रहेगी, आगे भगवान जाने।"

उन स्त्रियों ने कहा—"इतनी छोटी-सी बात पर क्यों चिन्ता करती हो!....हम

तुम्हारे लिये कात देंगी। तुम्हारे पति के आने के दिन, अगर सवेरे तुमने हमें आवाज दी, तो हम देखते देखते तुम्हारा काम कर देंगी। हमें जरा अपने घर एक दिन खाना दे देना। बस।"

पत्नी ने वही किया। पति के आने के दिन, उन्होंने बहुत-सा महीन सूत निकाल कर वहाँ ढेर लगा दिया।

पति आया। टेढ़े मुखवाली स्त्रियों को देखकर उसने पूछा—"ये कौन हैं?"

"हमारे पड़ोसी हैं। मेरी मदद के लिये आई हैं। भोजन करके मैंने जाने के लिये कहा है।" स्त्री ने कहा।

फिर थोड़ी देर बाद सब भोजन के लिये बैठे। जब वे स्त्रियाँ हँसती, या बातें करतीं, तो मुख एक तरफ मुड़ जाता। यह देख पति ने कहा—"क्यों आप सब के मुख, इस तरह एक तरफ मुड़ गये हैं! क्या जन्म से ही ऐसे हैं, या किसी कारण ऐसे हो गये हैं।"

"हम, सवेरे से रात होने तक सूत कातती हैं....कातते कातते, हमारे मुख टेढ़े हो गये हैं। इससे बढ़कर और कोई कारण नहीं है।" उन स्त्रियों ने कहा।

उनके जाने के बाद पति ने पत्नी का मुँह ध्यान से देखा। उसका सुन्दर मुँह था, और मुख ऐसा था, मानों किसी ने गढ़ कर बनाया हो।

"अब तक जो काता सो काता, अब तुम चरखे के सामने मत बैठो" कहते हुए, पति ने चरखा ले जाकर कहीं रख दिया।

हो भला भगवान का, कह कर पत्नी ने लम्बा निश्वास छोड़ा।

दक्षिण ध्रुव के आश्चर्य

[२]

दक्षिण ध्रुव कई तरह से अपने आप में एक संसार है। वहां का वातावरण, प्रकृति, जीव-प्राणी सब अलग हैं। यह काफ़ी नहीं है कि यहां की प्राकृतिक परिस्थितियों का ही परिशोधन किया जाय। इसीलिये बर्ड के साथ आये हुये अनेक विशेषज्ञ और वैज्ञानिकों ने, तरह तरह के अनुसन्धान शुरु किये।

भूमि से सम्बन्धित गुरुत्वाकर्षण शक्ति का माप लेनेवाले एक नये यन्त्र से यह मालूम किया गया कि भूमि के नीचे क्या क्या खनिज पदार्थ हैं। उड़ते वायुयानों से सौ फीट रस्सी से ये यन्त्र बांध दिये जाते। वायुयान के उड़ते रहने पर भूमि के गुरुत्वाकर्षण शक्ति में होते प्रति परिवर्तन को, यह यन्त्र सूचित करता रहता है।

इसकी सहायता से यह पता लगाया गया कि गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र हजार वर्ग मील है। और यह अंडे के आकार में फैला हुआ है। इस स्थल पर, कई जगह, गुरुत्वाकर्षण शक्ति सूचित करनेवाली सूई एकदम सीधी खड़ी हो जाती।

इस प्रान्त में उन्होंने एक और विचित्र बात देखी—"प्रकाश पैदा करने वाला अन्धत्व।" हमारी आँखें अन्धेरे में नहीं देख सकतीं न तेज प्रकाश में ही हम देख सकते हैं। पर एक और परिस्थिति में भी आँखों का कुछ नहीं दिखाई देता है, वह "छायाहीन प्रकाश" है।

इस ध्रुव प्रदेश में, कभी कभी ऐसा होता है कि रुई की तरह के बादल सारे आकाश में छा जाते हैं। नीचे से, बर्फ

से आनेवाला प्रकाश इन बादलों से टकराता है, और फिर भूमि वापिस आता है। इसतरह भूमि और आकाश के बीच हमेशा प्रकाश रहता है। इस प्रकाश में कहीं छाया नहीं होती। ऊँचाई नीचाई नहीं दिखाई देती। कुछ दूरी पर मनुष्य दिखाई देते हैं, फिर देखते देखते वे अदृश्य हो जाते हैं। वायुयान में उड़ने वालों को यह नहीं माळूम हो पाता कि आकाश कहाँ है और भूमि कहाँ है। सामने आनेवाले पहाड़ भी नहीं दिखाई देते।

यह वायुयानों के लिए बहुत खतरनाक है। इसप्रकार के प्रकाश समुद्र में एक वायुयान दुर्घटना में फंसा, और तीन मारे गये।

एक और आश्चर्यजनक बात :—

भूमध्य रेखा के पास, साठ हजार फीट ऊँचे वायुमण्डल में एक और परत शुरू होती है। जिसे स्ट्राटो स्फीयर कहा जाता है। भूमि से जैसे जैसे ऊपर वायुमण्डल में हम चलते जाते हैं, गरमी कम होती जाती है। ६० हजार फीट के ऊपर गरमी का कम होना बन्द हो जाता है। नहीं तो गरमी बढ़ जाती है।

परन्तु दक्षिण ध्रुव प्रान्तों में कुछ और परिस्थिति है। यहाँ वायुमण्डल में दूसरी परत दो हजार फीट ऊपर ही शुरू हो जाती है। दो हजार फीट और २,२०० फीट के मध्य की परत में, भूमि की अपेक्षा, ८ या १० डिग्री अधिक गरमी होती है।

यहाँ वायु की गति माळूम करने के लिए, बड़े बड़े बेलूनों को वायु में भेजकर उनकी गति और तेजी का अध्ययन किया गया। आकाश में जब बादल छाये हुये थे तब बेलून कुछ वस्तुओं के

साथ भेजे गये। और राडार द्वारा उनका अध्ययन किया गया।

आकाश में जब बादल थे यहाँ (गरमियों में) आकाश हल्का नीला न होकर, गहरा नीला होता है। वायुमण्डल में धूल कणों का न होना ही शायद इसका कारण है।

यहाँ कभी कभी बर्फ कोहरे की तरह छा जाता है। इस कोहरे में बहुत ही छोटे छोटे बर्फ के टुकड़े होते हैं। अगर इस कोहरे में से सूर्य को देखा गया तो सूर्य के चारों ओर सुन्दर इन्द्र धनुष दिखाई देता है।

बर्ड आदि के शिबिरों के कुछ दूरी पर बर्फ में गुफायें बनाकर कई "सील" रहते दिखाई दिये। इन गुफाओं में नीला प्रकाश आता रहता है। सरदी हो, या गरमी, सील अपनी गुफायें छोड़कर नहीं जाते। शायद ये गुफायें सीधे समुद्र तक पहुँचती हैं क्योंकि ये जन्तु, मछलियाँ खाकर ही जीती हैं।

सरदियों में जब इनकी गुफाओं के द्वार पर बर्फ जमा हो जाता है, तब ये जन्तु बर्फ काटकर छेद बना लेते हैं। ये

बर्फ पर मनुष्य की अपेक्षा अधिक तेजी से भाग सकते हैं। ऐसा मालूम होता है कि इनको मनुष्यों से भय नहीं है।

ये आश्चर्यजनक जन्तु उष्ण रक्तवाले जन्तु हैं। इस दक्षिण ध्रुव प्रदेश में इन जन्तुओं के सिवाय कोई और स्तन जन्तु नहीं है। सरदियों में आहार के लिए ये मछलियों को पकड़कर उनकी चरबी सुरक्षित रख लेते हैं। इनके शरीरों में बहुत-सी चरबी होती है। मादा सील, बच्चा देने के बाद, एक सप्ताह तक कुछ नहीं खाती। परन्तु उसका दूध पीनेवाला

बच्चा, रोज सात पाउन्ड के हिसाब से बढ़ता है।

बर्फ पर भी यात्रा की गई। इसके लिये १६ टन के दो भारी ट्रेक्टरों का उपयोग किया गया। पहिले यहाँ यात्री, बिना पहियों की गाड़ी पर, सवार होकर सफर किया करते थे। कुत्ते गाड़ी को खींचा करते थे। ट्रेक्टर पर सफर करने वालों को भी बहुत-सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। कहीं कहीं खड्डों को ऊपर पतली बरफ की परत रहती और ट्रेक्टरों के पार से वह बर्फ टूट जाती, और ट्रेक्टर खड्ड में जा गिरता।

इन दो ट्रेक्टरों को २४० मील को चक्कर लगाने के लिए छः दिन लगे। इन यात्राओं में, उन्होंने "मृग मरीचिका" देखी। रेगिस्तान में, लोगों को जहाँ नहर नहीं होती, वह नहर दिखाई देती है। दक्षिण ध्रुवों में भी यह भ्रम होता है। यात्रियों को, लगता है कि उनके सामने नीले रंग के बर्फ के टुकड़े, पहाड़ आदि हैं, या समुद्र में बर्फ के टुकड़े तैर रहे हैं।

तट के समुद्र में "दन्तक तिमिंगल" भी अनगिनत संख्या में होते हैं। किनारे के प्रदेश में ही सील और पेन्ग्विन पक्षी दिखाई दिये।

यह कहने में सन्देह नहीं है कि ध्रुव प्रान्त में अनन्त सम्पत्ति है। अगर वहाँ खान खोदने की सुविधा हो तो कोयला तेल, सोना, यूरेनियम आदि, धातुयें मिल सकती हैं। परन्तु अभी वहाँ खाने नहीं खोदी जा सकती। पर जब कभी इस प्रदेश पर मनुष्य का अधिकार होगा, तब इन धातुओं का भी उपयोग किया जा सकेगा।

सच्चा सन्यासी

एक देश के राजा को एक बार बड़ी जबर्दस्त बीमारी हुई, उसने प्रतिज्ञा की कि यदि उसकी बीमारी ठीक हो गई तो नगर के सन्यासियों को एक एक सोने की मोहर देगा। कुछ दिनों बाद उसकी बीमारी ठीक हो गई, वह स्वस्थ हो गया। उसने अपने एक विश्वासपात्र नौकर को बुलाकर, उसको पाँच हजार मुहरें देकर कहा—"अरे, तुम शहर में जाओ, जहाँ जहाँ जो जो सन्यासी मिले उसे एक एक मोहर दे देना।

नौकर नगर में शाम तक घूमता रहा। राजा के पास आकर, मोहरों की थैली सामने रखकर उसने कहा—"सारा शहर छान डाला, पर कहीं भी एक सन्यासी तक नहीं मिला।"

नौकर की बात सुनकर राजा का पारा चढ़ गया। उसने कहा—"इतने बड़े शहर में कहीं तुझे कोई सन्यासी ही नहीं दिखाई दिया? मैंने सुन रखा है कि शहर में चार-पाँच हजार सन्यासी हैं।"

नौकर ने विनयपूर्वक कहा—"क्षमा कीजिये। सन्यासी को पैसा नहीं लेना चाहिए। जो पैसा लेता है, वह सन्यासी नहीं होता।"

शिकारी कुत्ते — मामूली कुत्ते

एक गड़रिये के पास एक शिकारी कुत्ता था। वह मालिक के साथ भेड़-बकरियों के साथ घूमता रहता। गड़रिये की पत्नी जब कभी पति के लिए, गाँव से भोजन लाती, तो कुत्ते को देखकर नाक भौं चढ़ाती। कहा करती — "रोज, जितना एक आदमी खाना खाता है, इसे उतना खाना चाहिए। इसे छोड़कर क्यों नहीं दो-चार मामूली कुत्ते रख लेते! वे थोड़ा खाकर, भेड़-बकरियों की रखवाली करेंगे।"

पत्नी के बहुत हल्ला करने पर, गड़रिये ने तंग आकर शिकारी कुत्ते को भगा दिया और चार मामूली कुत्ते ले आया। पत्नी खुश हुई। कहीं कुछ आहट होती, तो चारों कुत्ते गला फाड़कर भौंकते।

एक रात, गड़रिया गहरी नींद में था कि एक भेड़िया, भेड़ों के झुन्ड के पास आया। भेड़िये को देखते ही, चारों कुत्ते दुम दबाकर गाँव की ओर भाग गये।

भेड़िया झुन्ड में जा घुसा, भेड़ों को खाकर चलता हुआ।

[६]

जब यह मालूम हुआ कि राजा बिम्बसार, बुद्ध के उपदेश सुनकर उनका शिष्य बन गया है, तो राजगृह के लोग पूछने लगे— "कौन हैं ये बुद्ध! ये क्या उपदेश देते हैं! निर्वाण का क्या मतलब है!" क्योंकि उनके प्रश्नों का ठीक उत्तर देनेवाला वहाँ कोई न था, इसलिए वे बारह मील चलकर, बुद्ध के विहार के पास जाने लगे। रोज़ आने जानेवालों की भीड़ बनी रहती। दूर दूर से लोग आते।

बिम्बसार ने सोचा कि वर्तमान स्थल, इष्टवन, जहाँ बुद्ध रह रहे थे, काफी दूर हो गया था और उसको तब तक शान्ति न मिलती जब तक वह बुद्ध के समीप, रोज़ काफी समय व्यतीत न करता। इसलिये उसने उद्यान को, बुद्ध-विहार बनाने का निश्चय किया। इस उद्यान के चारों ओर बाँस थे, इसलिये इस वन का नाम वेलुवन पड़ा।

बिम्बसार ने यह उद्यान शास्त्रोक्त रीति से बुद्ध को दिया। यह बुद्ध के निवास स्थलों में सब से अधिक प्रसिद्ध है।

राजगृह के पास ही, कोल्तिम और उपतिष्यम, नाम के दो ब्राह्मण ग्राम थे।

उनका परिपालन, कोलित और उपतिष्य नाम के दो क्षत्रिय किया करते थे। उन दोनों कुटुम्बों में सात पीढ़ियों से मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध चले आते थे। कोलित के पास पाँच सौ रथ थे और उपतिष्य के पास पाँच सौ सोने की पालकियाँ। उनमें से जो एक करता दूसरा भी करता। दोनों एक ही तरह के मनोरंजन किया करते। पर वे दोनों जन्म परम्परा से ऊब गये थे। वे समझ गये थे कि सुखों में समय बिता देने से न निर्वाण मिलेगा, न मुक्ति ही। जीवन का उद्देश्य वे न समझ पाये थे।

इसी समय राजगृह में, संग नाम का प्रसिद्ध परिव्राजक रहा करता था। कोलित और उपतिष्य ने कुछ समय तक इस संग की सेवा शुश्रूषा की। पर संग उनको मुक्ति का मार्ग न दिखा सका। इसके बाद उन दोनों ने कई देशों में भ्रमण किया, और जो कोई मिलता, उससे अनेक प्रश्न करते। एक भी उनका सन्देह निवारण न कर सका। इसलिये वे राजगृह वापिस आ गये।

इस समय बुद्ध वेलुवन में रह रहे थे। इस बीच, अश्वाजी नाम का बुद्ध का शिष्य, देश देशान्तर में बुद्ध के अवतरण के बारे में प्रचार करके राजगृह वापिस आया। आने के एक दिन बाद वह भिक्षापात्र लेकर घर घर घूमने लगा। यूँ घूमता घूमता वह उपतिष्य के पास आया।

उपतिष्य, अश्वाजी को देखकर सन्तुष्ट हुआ। उसको वह अपने घर भिक्षा के लिये निमन्त्रित करके ले गया। अश्वाजी से कुछ देर बातचीत करने के बाद उपतिष्य ने कहा—"स्वामी, आपकी बातों से ऐसा मालूम होता है, जैसे आपको मोक्ष

का मार्ग पता हो, जीवन मुक्ति का ज्ञान हो। आपके गुरु कौन हैं?"

"मेरे गुरु गौतम बुद्ध हैं।" अश्वाजी ने उत्तर दिया।

"उनके क्या सिद्धान्त हैं?" उपतिष्य ने पूछा।

अश्वाजी को सन्देह हुआ कि शायद उपतिष्य बुद्ध का विरोधी है। उसने कहा—"मैं, अभी अभी ही शिष्य हुआ हूँ। धर्म तो निस्सीम है। मैं कैसे उसके बारे में विस्तार से कह सकता हूँ?"

"कोई बात नहीं। मैं तो सत्य का अन्वेषण कर रहा हूँ। मुझे कुछ रास्ता मिल गया तो मैं स्वयं उस पर चला चलूँगा। अगर आप मुझे एक सत्य बतायें तो उनमें से सैकड़ों, हजारों सत्यों का मैं अनुमान कर सकता हूँ।" उपतिष्य ने कहा।

तब अश्वाजी ने यह श्लोक सुनाया :

"ये धम्म हेतुप्पभवा,
तेसन हेतुन् तथागतो,
अहा तेसन् च यो निरोधो,
एवन् व्यादि महा समनो।

(हर चीज़ किसी कारणवश पैदा होती है। तत्वज्ञों ने यह कारण बताया है।

इन सबको (जन्म परम्परा को) रोका जा सकता है, यही महाश्रमण (बुद्ध) ने बताया है)

यह सुनते ही उपतिष्य अत्यन्त आनन्दित हुआ। और अश्वाजी का आलिंगन करके उसने कहा—"तुम्हारी बातें सुनकर मुझे सन्तोष हुआ है। बुद्ध में मुझे विश्वास हो गया है। वे कहाँ हैं?"

अश्वाजी से बुद्ध के रहने की जगह मालूम करके, उपतिष्य ने कोलित के पास जाकर कहा—"मित्र, मुझे निर्वाण का मार्ग मिल गया है।" उसने उसे वह

श्लोक सुनाया, जिसको अश्वाजी ने उसे सुनाया था।

कोलित को भी यह विश्वास हो गया कि बुद्ध जन्म विमुक्ति के बारे में उपदेश दे सकते थे। दोनों मिलकर अपने प्रथम गुरु संग के पास गये। संग ने उनका कहना सुना—"मेरा बुद्ध के पास आना सम्भव नहीं है। मेरी कीर्ति सारे जम्बु द्वीप में है, मुझ जैसा किसी और का शिष्य कैसे हो सकता है!"

परन्तु संग के साथ रहनेवाले पाँच सौ शिष्य बुद्ध के दर्शन करने के लिये निकल पड़े। यह देख संग के आँखों में तरी आ गई। इसलिये, उसके आधे शिष्य उसी के साथ रह गये। शेष, कोलित और उपतिष्य के साथ बुद्ध को देखने के लिए तुरत चले गये।

वे जब विहार में पहुँचे, तो बुद्ध उपदेश कर रहे थे। कोलित और उपतिष्य को दूरी पर देखते ही कहा—"मेरे प्रधान शिष्य आ रहे हैं।"

उन्होंने बुद्ध को प्रणाम करके तत्वज्ञान प्रदान करने की प्रार्थना की। बुद्ध ने उनसे कहा—"मेरा आश्रय लीजिये। कष्टों से विमुक्त होने के लिये ब्रह्मचर्य का पालन कीजिये। मैं आपको मोक्ष-मार्ग के बारे में उपदेश दूँगा।"

इसके बाद, उपतिष्य, कोलित और संग के दो सौ पचास शिष्य बौद्ध हो गये। कोलित, अपना नाम बदलकर मुगलन हुआ और उपतिष्य सेरिपुत हुआ। ये दोनों बुद्ध के प्रधान शिष्य थे।

इसके कुछ दिनों बाद पूर्णिमा की चान्दनी में, एक बड़ी सभा हुई। इस सभा की विशेषता यह थी कि उस सभा में उपस्थित लोग बिना निमन्त्रण के ही

एकत्रित हुये थे। उसमें भाग लेनेवाले सब अर्हत श्रेणी के थे। उस सभा में बुद्ध ने अपने शिष्यों से इस प्रकार कहा।

"सब्ब पापस्स अकरणन्,
कुसलस्स उपसम्पदा,
स चित्त परियोदपनन्;
एतन् बुद्धानुसासनन्।"

(कोई पाप न करो। प्रत्येक सद्गुण का पालन करो। मन को स्वाधीन रखो, यही बुद्ध का अनुशासन है)

बुद्ध वेलुवन में जब थे, तभी कपिलवस्तु में राजा शुद्धोधन को मालूम हुआ कि सिद्धार्थ बुद्ध हो गये थे। उसने एक उत्तम क्षत्रिय के साथ हजार आदमियों को भेजा, और अपने पुत्र के लिए यह सन्देश उन्हें दिया :—

"मैं तुम्हें देखना चाहता हूँ। इसलिए तुम चले आओ। सब तुम्हारा उपदेश सुन रहे हैं। पर तुम्हारे पिता, व अन्य निकट बन्धुओं को तुम्हें सुनने का मौका नहीं मिला है। तुमको देखे कितने ही वर्ष हो गये हैं।"

बुद्ध के लिए यह सन्देश लेकर जब शुद्धोधन का दूत, विहार के पास पहुँचा तो उस समय बुद्ध सभा में उपदेश दे रहे थे। वह क्षत्रिय, और उसके साथ आये हुए हजारों आदमी, बुद्ध का उपदेश सुनकर बौद्ध हो गये। उन्होंने शुद्धोधन का सन्देश बुद्ध को नहीं दिया।

जब भेजे गये लोग वापिस न आये, तो एक और दूत को, बहुत-से आदमियों के साथ शुद्धोधन ने भेजा। परन्तु वे भी पहिले गये लोगों की तरह बुद्ध के शिष्य हो गये और विहार में रहने लगे।

शुद्धोधन ने इस प्रकार सात और दूत भेजे, सब बुद्ध के शिष्य हो गये। कोई

कालदाय भी बुद्ध के पास गया और उनके उपदेश सुनकर उनका शिष्य हो गया। फिर एक सप्ताह बाद बसन्त ऋतु शुरु हो गई। जहाँ देखो, वहीं हरियाली थी। जगह जगह फूल खिले हुए थे। बुद्ध के लिए, अपने बन्धु-बान्धवों को देखने का यही अच्छा मौका जान, कालदाय उनके पास जाकर राजगृह और कपिलवस्तु के मार्ग की शोभा का वर्णन करने लगा।

बुद्ध ने थोड़ी देर वह वर्णन सुनकर पूछा—"यह सब वर्णन मुझे क्यों सुना रहे हो।"

"कुछ भी नहीं। सूर्य के लिए जिस प्रकार पद्म, चन्द्रमा के लिए कमल जिस प्रकार प्रतीक्षा करते हैं, उसी प्रकार आपके पिता और माता आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

बुद्ध ने थोड़ी देर सोचा। फिर यह निर्णय करके कि जन्मभूमि जाने का समय आ गया था उससे कहा—"अच्छा, तो कल सवेरे चलेंगे।"

अगले दिन बुद्ध कपिलवस्तु के लिए निकल पड़े। उनके साथ अंग, मगध देश के दस हजार शिष्य और कपिलवस्तु के

वापिस न गया और किसी ने भी शुद्धोधन का उपदेश बुद्ध को न दिया।

क्योंकि वे सब मेरे विश्वासपात्र न थे, इसीलिये ही उन्होंने मेरी आज्ञा का पालन नहीं किया, यह सोच अपने विश्वासपात्र, कालदाय को बुलाकर कहा—"मैं मरने से पहिले अपने लड़के को देखना चाहता हूँ। उसको बुला लाने के लिए, मैंने नौ दूतों को, नौ हज़ार आदमियों के साथ भेजा। पर एक भी वापिस न आया। क्या तुम जाकर उससे कहोगे कि मैंने उसे बुलाया है!"

दस हजार शिष्य भी निकले। ये रोज सोलह मील चलकर दो महीने बाद कपिलवस्तु पहुँचे।

बुद्ध के कपिलवस्तु के पहुँचने के कुछ समय पूर्व, काल्दाय शुद्धोधन के घर गया। शुद्धोधन उसको देखकर बहुत आनन्दित हुआ। शुद्धोधन ने उसको भोजन दिलवाया। परन्तु काल्दाय उस भोजन को भिक्षापात्र में डालकर जाने के लिए उठने लगा।

"क्यों जा रहे हो? भोजन करो।" शुद्धोधन ने कहा।

"नहीं, मैं अपना भोजन ले जाकर बुद्ध को दूँगा।" काल्दाय ने कहा।

"बुद्ध कहाँ है?" शुद्धोधन ने पूछा।

"यहाँ आ रहे हैं। रास्ते में हैं।" काल्दाय ने कहा।

"बुद्ध को मैं और भोजन दिलवाऊँगा। तुम इसे खाकर जाओ।" शुद्धोधन ने कहा।

काल्दाय ने भोजन किया। शुद्धोधन ने उसके भिक्षापात्र को सुगन्धित जल से धुलवाया। उसमें उत्तम भोजन रखवाकर काल्दाय द्वारा बुद्ध के पास भेजा। उस

दिन बुद्ध ने अपने पिता द्वारा भेजा हुआ भोजन ही खाया।

फिर शुद्धोधन ने बुद्ध के रहने के लिए निग्रोध वन को तैयार करवाया। निग्रोध नाम के शाक्य राजा ने उसे तैयार करवाया था।

बुद्ध जब कपिलवस्तु नगरी के द्वार पर पहुँचे, तो उनका स्वागत करने के लिए एक जलूस निकला, जिसके सामने पाँच सौ, सोलह सत्रह वर्ष के बाल-बालिकायें थीं। उसके पीछे बारह वर्ष के राजकुमार और राजकुमारियाँ थीं। उनके पीछे एक सौ

साठ हजार आदमी, परिवार के साथ चन्दन पुष्प आदि, लेकर राजा स्वयं निकले।

इस जलूस के साथ बुद्ध उद्यान में पहुँचकर, एक ऊँचे आसन पर बैठे। उनके बीस हजार शिष्य उनके चारों ओर बैठे थे। बुद्ध के दर्शनार्थ आये बड़े शाक्यों ने छोटों से कहा—"तुम बुद्ध के पाँव छुओ।" वे स्वयं अलग बैठ गये। वे बड़े थे, चाचा, ताऊ, बाबा, दादा आदि, सम्बन्ध में होते थे, इसलिये उन्होंने बुद्ध के सामने साष्टाङ्ग करना जरूरी न समझा।

बुद्ध उठकर खड़े हो गये। उस समय, वहाँ उपस्थित लोगों ने दो बुद्धों को अलग अलग देखा, उनके शरीर से, छः रंगों की किरणों का निकलना देखा। फिर उन्होंने अनागत वंश वृत्तान्त नाम के मैत्री बुद्ध की जीवनी सुनाई।

बुद्ध का उपदेश समाप्त होते ही शुद्धोधन महाराजा उठे। अपने पुत्र के सामने तीन बार साष्टाङ्ग प्रणाम करके उन्होंने कहा—"बेटा, बुद्ध भगवान, मैं पहिले तुझे दो बार साष्टाङ्ग प्रणाम कर चुका हूँ। तू यद्यपि मेरा लड़का है, पर मैं आज से तुझे अपना लड़का नहीं मानता, क्योंकि मैं तेरे दास होने लायक भी नहीं हूँ। मैं जानता हूँ यदि मैं तुझे सारा राज्य भी देना चाहूँ, तो वह सब तेरे लिए राख के समान है।"

शुद्धोधन के कहते ही बड़े लोगों का घमंड खतम हुआ। उन्होंने भी बुद्ध को साष्टाङ्ग नमस्कार किया। सब के सन्देहों का निवारण हो गया।

इस प्रसंग में, बुद्ध ने विश्वन्तर नाम की जातक-कथा सुनाई। (अभी है)
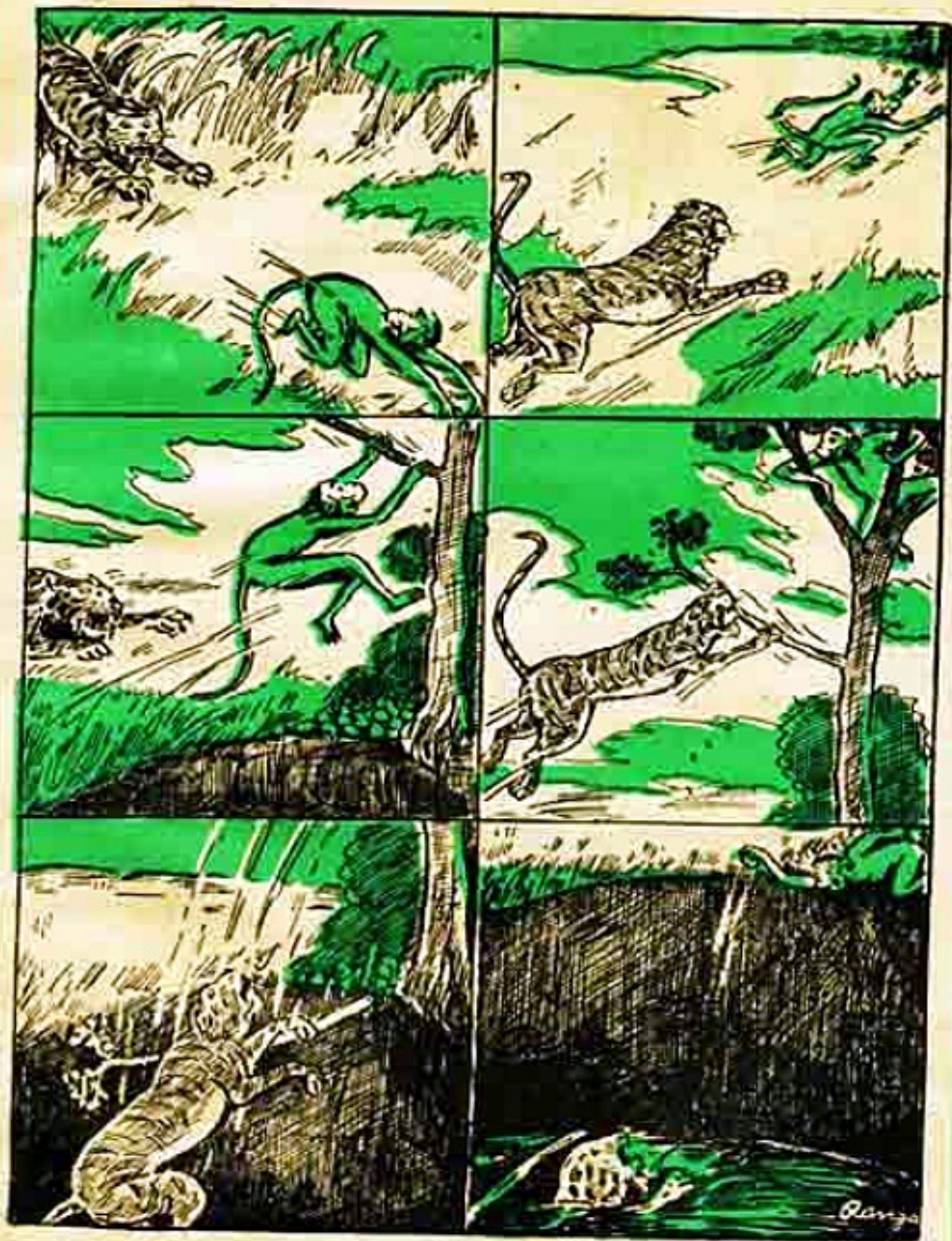
अजीब जादू

एक दिन एक जमीन्दार के पास एक अजीब आदमी आया। उसके कपड़े फटे हुए थे। उसके कान खड़े-से लगते थे।

जमीन्दार के नौकरों ने उससे पूछा—"तुम कौन हो? तुम्हें क्या काम है?"

"मैं जादूगर हूँ। हुजूर को जादू दिखाकर कुछ ईनाम पाना चाहता हूँ।" अजीब आदमी ने कहा।

नौकर ने उसका विश्वास न किया। क्योंकि जादू करनेवालों के पास एक थैला, और जादू का डंडा होता है। वे पगड़ी बाँधकर बड़ी शान से अक्सर आते हैं। इस अजीब आदमी को देखने से जादूगर नहीं मालूम होता था।

"तू भला क्या जादू करेगा! हुजूर तुम्हें पैसा तो क्या देंगे, खूब पिटवाकर चलता करेंगे। जा, जा।" कहकर नौकरों ने उसे भेजना चाहा।

"अरे, मार तो मुझे नहीं पड़ेगी। हुजूर से जाकर कहिये कि जादूगर आया है।" उस आदमी ने कहा।

नौकरों ने वही किया। अन्दर जमीन्दार अपने मित्रों और नौकरों के साथ बैठा हुआ था। सब के मनोरंजन के लिए, जादूगर को भेजने के लिए कहा।

उसने जादूगर से पूछा—"तुम क्या जादू करते हो? हमने बड़े बड़े जादूगरों के खेल देखे हैं। अगर कोई नया खेल जानते हो, तो दिखाओ, नहीं तो अपना रास्ता नापो। अगर कोई मामूली खेल दिखाना हो, तो हम देखने के लिए तैयार नहीं हैं।"

"हुजूर देखें तो, मेरे खेल बहुत नये हैं।" कहते हुए जादूगर ने घास के तीन

टुकड़े चुनकर लिए "मैं, इन्हें अपनी हथेली पर रखकर फूकूँगा, इस तरह फूकूँगा कि बीच का ही उड़ेगा।"

"यह तो मुश्किल बात है, करो, देखें तो।" जमीन्दार ने कहा। जादूगर ने बायें हाथ में तीनों टुकड़ों को रखा, अपने दायें हाथ से दोनों तरफ के टुकड़ों को दबाकर बीच के टुकड़े को फूँका। वह उड़ गया।

"अरे भाई तुम्हारा खेल भी खूब है। यह कौन नहीं कर सकता!" जमीन्दार के एक मित्र ने कहा।

"अच्छा तो आप कीजिये तो सही।" जादूगर ने कहा।

जमीन्दार के मित्र ने, जादूगर की तरह हथेली पर टुकड़ों को रखा, उनमे से दो को दायें हाथ से दबाया। यकायक बिजली-कौंधी, आँखें चौंधिया गईं। जब उन्होंने आँखें खोलीं तो उसकी हथेली नीचे गिर गई थी। सब को अचरज हुआ।

"हुजूर, गौर फरमाइये, आप मेरे कान तो देख ही रहे हैं, मैं इनमें से एक को हिलाऊँगा।"

"यह तो मुश्किल है। करके तो दिखाओ।" जमीन्दार ने कहा। तुरन्त जादूगर ने अपने दायें हाथ में कान पकड़कर; उसे हिलाया। सब हँसे। जो अपना दायाँ हाथ खो बैठा था, उसे गुस्सा आया। उसने कहा—"यह भी कोई हुनर है!" उसने भी अपना कान पकड़कर हिलाया। फिर बिजली चमकी और उसका कान टूटकर हाथ में गिर गया।

जमीन्दार ने जादूगर के चातुर्य की प्रशंसा करके उसको ईनाम दिया। जादूगर ने जमीन्दार के मित्र के हाथ और कान को यथास्थान लगा दिया। फिर वह चला गया।

माँ :
कुरता कैसे फटा ?
लड़का :
सीधा फट गया।

"ऐनक लगाने से क्या आँखों की दर्द कम हो गई ?"

"आँखों की दर्द तो कम हो गई, कान की दर्द और नाक की दर्द बढ़ गई है।"

भाई : "देखो, कुरता कितना ढीला हो गया है।
छोटा भाई : "लोटा भर पानी पीलो, ढीलापन नहीं मालूम होगा।"

पोलीस : "ठहरो।"
"ठहरो भी, पहिले ही अधिक भार हो रहा है।"

"बत्तख की चोंच" प्लाटीयन

जब हमने आश्चर्यजनक स्तन जन्तुओं के बारे में "चन्दामामा" में लिखा था, तब "बत्तख की चोंच" प्लाटियन का भी संक्षिप्त परिचय दिया था। अब इस आश्चर्यजनक जन्तु के बारे में कुछ और विवरण देंगे।

"बत्तख की चोंच" सचमुच बड़ा अजीब जानवर है। उसमें मछली के लक्षण, पक्षी के लक्षण, सरीसृप के लक्षण और पशुओं के लक्षण दिखाई देते हैं। इसकी नाक भी, "बत्तख की चोंच" की तरह होती है। सारे शरीर पर बाल होते हैं। चार पैर होते हैं। मादा "बत्तख की चोंच" अंडे देती है, उन्हें सेती है और बच्चों को दूध देकर पालती है। ये सब बातें प्रायः किसी एक जन्तु में नहीं पाई जातीं।

संसार में ये पशु आस्ट्रेलिया के पूर्वी तट पर और उसके उत्तर के टस्कानिया में ही पाये जाते हैं।

दस, पन्द्रह करोड़ वर्ष पूर्व, स्तन जन्तु इस "बत्तख की चोंच" की तरह कई लक्षणोंवाले मिले जुले होते थे। कालक्रम से इन स्तन जन्तुओं में परिवर्तन हुआ और जिनमें परिवर्तन न हो सका, वे मर मिट गये। इस तरह बचे बचाये, एक दो स्तन जन्तुओं में "बत्तख की चोंच" को देखकर आज हम आश्चर्य करते हैं।

शायद आस्ट्रेलिया में भी "बत्तख की चोंच" का नाम शेष रह जाता। क्योंकि

जहरीले नाखून

उसका चर्म बहुत मुलायम होता है और बड़े-बड़े दामों पर बिकता है इसलिए सब उनको पकड़ने लगे। उनका चमड़ा बेचने लगे। परन्तु उस देश में एक कानून बनाया गया जिसके द्वारा "बतख की चोंच" को पकड़ना निषिद्ध कर दिया गया। उसके बाद कुछ उसको घरों में पालने लगे। अब कई को चिड़िया घरों में भी पाला जा रहा है।

परन्तु "बतख की चोंच" को पालना बहुत मुश्किल है। क्योंकि वे बहुत डरपोक होते हैं। नैसर्गिक वातावरण में ही वे थोड़ी-सी आहट होने पर भागकर छुप जाते हैं। उनमें श्रवण-शक्ति अधिक होती है। फिर उनके जीवन का तरीका भी विचित्र है। उनके पालनेवाले को, उनके अनुकूल वातावरण तैयार करना होता है उनके लिए आवश्यक आहार जुटाना होता है। कई तरह की व्यवस्थायें करनी होती हैं।

ये निशिचर हैं। ये रात के समय बाहर निकलते हैं। पानी में तैरते हैं। खाते हैं। कई का कहना है कि दिन के प्रकाश में उनको ठीक तरह दिखाई नहीं देता, इसीलिये ही वे रात में घूमते फिरते हैं।

जब वे दिन के समय तैरते हैं तो रास्ते में पड़ी चीज़ों से जा टकराते हैं। इसका एक और कारण भी हो सकता है। उसकी आँखों का निर्माण ही कुछ ऐसा है कि उनको आँखों के नीचे की चीज़ तो अच्छी तरह दिखाई देती है पर सामने की चीज़ नहीं दिखाई देती।

जब वे पानी के नीचे तैरते हैं, तो उनकी आँखें और कान भी बन्द हो

जाते हैं। उसकी चोंच में नसें ही नसें हैं। वह केवल स्पर्श ज्ञान से ही अपने आहार को चुनता है। इसी कारण वह आहार के साथ लगे मिट्टी को भी खा जाता है। यही वजह है कि प्रति "बत्तख की चोंच" के पेट में मिट्टी भी दिखाई देती है। उनको पालनेवालों को भी खाने के साथ कुछ मिट्टी भी देनी होती है। यह इसकी एक और विशेषता है।

मादा "बत्तख की चोंच" प्रायः दो अंडे देती है। कभी कभी एक और कई बार तीन अंडे भी देती है। अंडे देने के समय, वह अपने नाले के किनारे पर एक गुफा खोदती है। कभी कभी उस गुफा की लम्बाई २० ४० फीट तक भी होती है। जब वह गुफा खोदती जाती है तो बीच बीच में दीवारें भी छोड़ती जाती है। गुफा के अखिर में वह पत्तों और तिनकों से एक घोंसला भी बनाती है और उसमें अंडा रखती है। ये चमड़े के अंडे से होते हैं। मामूली अंडों की तरह उन पर छिल्का नहीं होता। वह उस गुफा में हमेशा नहीं रहती।

"बत्तख की चोंच" के बच्चे

कभी कभी बाहर आकर अन्दर जाती आती रहती है। परन्तु ऐसा करते समय वह सावधानी से दीवारें बनाती जाती है, ताकि गुफा ढह न जाये।

नर "बत्तक की चोंच" भी सुरंग बनाता है, पर वे उतने ऊँचे नहीं होते। बच्चे पैदा हो ने पर मादा "बत्तख की चोंच एक छोटी गुफा में रहती है। लेकिन नर और मादा "बत्तख की चोंच" कभी भी एक साथ एक गुफा में नहीं रहते।

"बत्तख की चोंच" के अंडे चिड़िया के बराबर होते हैं। माँ उनको पूँछ और पेट के बीच रखकर सेती है। बारह दिन बाद बच्चे अंडों से निकलते हैं। परन्तु उस समय उनके न आँख होती है न उनके शरीर पर बाल ही होते हैं। वे एक पिंड की तरह होते हैं। ये बच्चे जब माँ की छाती ढूढ़ते हैं तो चर्म के छेदों में से दूध निकलता है। और इस दूध को अपनी चोंचों से वे पी जाते हैं। शायद संसार का कोई और जन्तु इस प्रकार दूध नहीं पीता।

"बत्तख की चोंच" माँसाहारी है। वह प्राय: कीड़े मकोड़े खाता है। वह पानी में तैरते समय अपने आगे के पैर ही हिलाता है। पिछले पैर इसके लिए पतवार से होते हैं। उसकी पूँछ छोटी और बहुत मजबूत होती है। उसमें चरबी होती है। जब वह खाता नहीं है तो उसकी पूँछ पतली हो जाती है।

"बत्तख की चोंच" के पिछले पैरों में विष भरे नाखून-से होते हैं। उनके चुभने से घाव हो जाता है और घाव के भरने में कई बार सप्ताह तक लग जाते हैं।

और एक और विचित्र बात "बत्तख की चोंच" यद्यपि पुरातन जन्तु है, फिर भी मनुष्य का आसानी से आदी हो जाता है। पालतू "बत्तख की चोंच" में कई ऐसे हैं, जो सीटी बजाने पर भोजन के लिये आते हैं और कई झाड़ू आदि से खेलते हैं। वह डरपोक होने पर भी इस तरह घरेलू बना लिया जाता है।

तड़क-भड़क

एक राजा के एक लड़का था। वह हमेशा गरीबों के साथ गली गली फिरा करता, गरीबों और भिखारियों के साथ दोस्ती किया करता।

उसका मन बदलने के लिए राजा ने बहुत कोशिश की पर वह न बदला। आखिर उसे गुस्सा आ गया, उसने हुक्म दिया—"जाने यह कम्बख्त मेरे यहाँ क्यों पैदा हुआ है, इसे ले जाकर फाँसी पर चढ़ा दो।"

राजकुमार ने अपने पिता से कहा—"मुझे थोड़ा समय दीजिये, फिर मुझे चाहें तो फाँसी पर चढ़वा दीजिये।" राजा इसके लिए मान गया।

राजकुमार कहीं जाकर तीन सन्दूक ले आया—एक सोने का था, दूसरा चान्दी का और तीसरा लकड़ी का। "इनमें से कौन-सा सब से अच्छा है? क्या कोई बता सकता है।" राजकुमार ने दरबारियों से पूछा। सब ने कहा कि सोने का सन्दूक सब से अच्छा था, उसके बाद चान्दी का, सब से खराब लकड़ी का। राजकुमार ने तीनों सन्दूक खोले, सोने के सन्दूक में बिच्छू, व साँप वगैरह थे। चान्दी के सन्दूक में कंकड़ पत्थर थे। लकड़ी के सन्दूक में हीरे मोती वगैरह।

"ऊपर की चमक देखकर भ्रम में न पड़िये, आदमी भी ऐसे होते है, यह न सोचो कि गरीब सब खराब हैं, और धनी अच्छे।" राजकुमार ने कहा। राजा ने उसको माफ कर दिया।

"पंडितजी, आप कभी और आना।"

"वे इस तरह कई बार कूदेंगे!"
"हम जितनी चाहें, उतनी मछलियाँ!"

बैठिये, यह सीट खाली है।

"हिलिये मत पिताजी, मैं कूद रहा हूं।"

क्या जानते हो ?

★ नमक के १४००० उपयोग हैं। भोजन में, आचार आदि में इसका उपयोग, उसके कई उपयोगों में एक है। इस प्रकार उपयोग में आनेवाला नमक बहुत कम है।

★ संसार में सब से गहरी खान कोलार में है। उसकी गहराई १०,०३० फीट है यानि, करीब करीब दो मील। उसकी गहराई हर साल २५० फीट बढ़ती है।

★ अमेरिका में तीन काम करनेवालों में दो के पास कार है। सौ में, आठ बस में, तीन अन्डरग्राउन्ड रेल में, एक रेल में जाते हैं। सौ में दस काम पर पैदल जाते हैं।

★ घोड़े, कुत्ते, बिल्ली, बन्दर, सूअर, बकरी, आदि, दस तरह के जानवरों को जब १०० डिग्री गरमी में रखा गया, तो देखा गया कि घोड़े को सब से अधिक पसीना आता है और खरगोशों को बिल्कुल नहीं आता।

★ हम अक्सर देखते हैं कि थके लोग आँखें मलते हैं। इसका एक कारण है। मनुष्य के थक जाने पर साँस ओर हृदय की धड़कन मन्द पड़ जाती है। इसी तरह आँखों की नसों में थकान-सी आ जाती है ये नसें ही आँखों को कुछ तर-सी रखती हैं। यह तरी कम होते ही, हमें तकलीफ होती है। और आँखों के मलने से आराम मिलता है।

★ संसार में सब से ऊँचा नगर गर्टोक है। यह तिब्बत में है। यह समुद्र स्तर से, १५,१०० फीट ऊँचा है। यूनाइटेड स्टेट्स का कोई भी पर्वत इतना ऊँचा नहीं है।

★ आज जो शतरंज सर्वत्र खेला जाता है, इसका आविष्कार कई शताब्दी पहिले भारत में ही हुआ था। शतरंज में "शाह" जिसको कहा जाता है, वह हिन्दी के राजा का फारसी रूप ही है। बहुत समय से रूसी लोग इसमें अग्रणी रहते आये हैं।

मेहनत किसी का, फल किसी को !

ताकि सरदी में ठंड न लगे, एक बैल ने अपने लिए घर बनाने की सोची। वह जा रहा था कि एक मेंढे ने पूछा—"कहाँ जा रहे हो चाचा !"

"सरदी आनेवाली है। घर बनाने जा रहा हूँ, बेटा !" बैल ने कहा।

"चलो, मैं भी आऊँगा।" मेंढे ने कहा। दोनों के कुछ दूर जाने के बाद एक सूअर दिखाई दिया। थोड़ी दूर जाने के बाद एक मुरगी दिखाई दी। सब मिलकर चलते जाते थे।

"घर बनाने के लिए यह अच्छी जगह है। आओ, बनायें।" बैल ने कहा। "मुझे क्या जरूरत है घर की ! मेरे शरीर पर बड़े बड़े बाल जो हैं, गरमी देने के लिये !" मेंढे ने कहा। "अगर सरदी लगी, तो मैं एक सुरंग बना लूँगा !" सूअर ने कहा। "यदि पँख मुँह पर रखकर सो गई तो सरदी नहीं लगेगी !" मुरगी ने कहा।

बैल ने बड़ी मेहनत से एक झोंपड़ा बनाया। सरदी आ गई। मेंढे, सूअर और मुरगी ने आकर दरवाज़ा खटखटाया, परन्तु बैल ने न खोला। वे किवाड़ खटखटाते गये। धमकियाँ देने लगे। मुश्किल से किवाड़ टूटते टूटते बचे।

बैल बिचारा क्या करता ! उसने उनको आने दिया। बैल के बनाये हुये घर में उन सब ने सरदी काट दी।

हमारी रसायनशालायें :

२. नेशनल केमिकल लेबोरटरी—पूना

हमारे देश में रसायनिक उद्योग, अभी प्रारम्भिक दशा में ही है। रसायनिक अनुसंधान भी धीमे-धीमे ही हो रहा है। इस कमी को पूरा करने के लिए, एक संस्था की स्थापना का निश्चय १९५१ सितम्बर में किया गया। तदनुसार १९४८ फरवरी में इसके लिए भवन निर्माण हुआ, जिसका उद्घाटन, प्रधान मन्त्री श्री नेहरू ने १९५०, जनवरी ३, को किया। हमारे राष्ट्रीय रसायनशालाओं में सब से पहिले यहीं कार्य शुरू हुआ।

यह पूना से पाँच मील दूरी पर है। इस भवन की लम्बाई ६४० फीट है और चौड़ाई २०५ फीट है। इसमें पाँच मंजिले हैं। लाइब्रेरी, आडिटोरियम, म्युजियम, कारखाना, भोजनशाला, व आफीस आदि भी इसी में हैं। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य देश की नैसर्गिक सम्पत्ति को बढ़ाना है। देश की उत्पादन सामग्री की खोज, व कल कारखानों में इसकी खपत वर्तमान उद्योगों की वैज्ञानिक जांच पड़ताल करना, वैज्ञानिक ज्ञान को उद्योगों तक पहुँचाना, उद्योगों की मदद करना, रसायनिक प्रशिक्षण आदि कार्य यह संस्था कर रही है।

चटपटी बातें

चित्रकला के विद्यार्थी ने अपना एक चित्र एक प्रसिद्ध चित्रकार को दिखाया।

"भाई, इस चित्र में किस मछली को बनाया है!"

"जी, शार्क..." विद्यार्थी ने कहा।

"क्या तुम जानते हो, शार्क कैसा होता है!" चित्रकार ने पूछा।

"जानता तो नहीं हूं। पर इसमें क्या है! जो चित्रकार देवताओं का चित्र बना रहे हैं क्या वे सब उन्हें देखकर ही बना रहे हैं!" विद्यार्थी ने कहा।

* * *

एक बड़े आदमी ने, एक छोटे लड़के की कलाई पर घड़ी देखकर पूछा—"तुम्हारी घड़ी क्या समय बता रही है!"

"वह बताती नहीं है। अगर समय मालूम करना है तो उसकी ओर देखना होता है।" लड़के ने कहा।

* * *

"क्यों जी, आपकी लड़की वीणा बजाती अब गाती क्यों नहीं है?"

"और कुछ नहीं, अब बिना गायन के वीणा सुनकर पड़ोसिन कह रही है—"लगता है अब आपने अपनी वीणा बदलकर, नई वीणा खरीद ली है।"

* * *

"क्या आप इस बात पर विश्वास कर सकते हैं कि सन् २००० में, स्त्रियाँ राज्य कर रही होंगी" एक सम्वाददाता ने चर्चिल से पूछा।

"यानि तबतक उनका राज्य चलता रहेगा?" चर्चिल ने आश्चर्य से पूछा।

* * *

ज्योर्ज बर्नार्डशा ने अपने नये नाटक के लिए दो टिकट चर्चिल के पास भेजते हुए लिखा—"एक टिकट आपके लिए, दूसरा आपके किसी दोस्त के लिए, अगर कोई हो।"

चर्चिल ने यह जवाब दिया–"पहिले दिन न आ सकूंगा। दूसरे दिन आऊंगा, अगर यह तब तक चला।"

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

सितम्बर १९५९ :: पारितोषिक ११)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिये। परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिख कर निम्नलिखित पते पर ता. ५, जुलाई '५९ के अन्दर भेजनी चाहिये।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन
वडपलनी :: मद्रास - २६

जुलाई - प्रतियोगिता - फल

जुलाई के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं। इनके प्रेषक को १० रु. का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो : यह देखो दूध की हंडी !

दूसरा फ़ोटो : यह देखो घास की मंडी !!

प्रेषक : हरीश उदासी
c/o चित्रा टॉकीज अमरावती (म. प्र.)

चित्र - कथा

दास और बास एक नाटक देखने गये। नाटक में, यमराज का अभिनय करनेवाले एक शरारती लड़के ने अपने हाथ की गदा देखनेवालों पर फेंक और होहल्ला करने लगा। अगले दिन जब वह शरारती लड़का गड़बड़ी कर रहा था कि कोई जानवर उस पर यकायक कूदा। "यमराज" डर के मारे "शेर! शेर....!!" चिल्लाता भागने लगा। दास और बास ने झट "टाइगर" पकड़ लिया और उसके ऊपर पड़ी नकली दाढ़ी वगैरह झाड़ दी।

Printed by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press Private Ltd.,
and Published by B. VENUGOPAL REDDI for Sarada Binding Works,

Photo by P. B. Khat

पुरस्कृत

प्रेषक :

CHANDAMAMA (Hindi)   JULY 1959   Regd. No. M. 5452